डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 15 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 8 R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

शिखर दृष्टि जीवन की...

साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

शीर्षक सत्यापन पत्र संख्या
RAJHIN16831/20/01/2013-TC

जयपुर, गुरुवार, 07 अक्टूबर, 2021

hillviewsamachar@gmail.com

नमन...

गांधी जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गांधी सर्किल पर गांधी जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि कर उन्हें नमन किया।

मैं अभी 15 - 20 साल तक कहीं जाने वाला नहीं जो परेशान होते हैं होते रहेः गहलोत

ब्यूरोक्रेट सबसे पहले चिंतित होते हैं कि सरकार रहेगी या नहीं, सरकार पूरे 5 साल चलेगी

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। 2 अक्टूबर को प्रशासन शहरों के संग अभियान के मुख्य समारोह में अपने संबोधन में अशोक गहलोत ने कहा कि मैं अभी 15 - 20 साल तक कहीं जाने वाला नहीं हूं हमारी सरकार पूरे 5 साल बिना किसी रुकावट के चलेगी और अगली बार फिर से सत्ता प्राप्त करेगी। जनता का हम पर विश्वास है। यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल बहुत अच्छा काम कर रहे हैं और उन्हें चौथी बार भी मैं यूडीएच मंत्री का दायित्व दूंगा। अपने स्वास्थ्य को लेकर उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ रघु शर्मा के बारे कहा कि रघु शर्मा ने उनकी तबीयत को लेकर जिस तरह से पूरे वक्त मॉनिटरिंग की है वह वास्तव में अपने दायित्वों के प्रति संवेदनशील होने का प्रमाण है।

मुख्यमंत्री ने कमरे में बंद रहने के भाजपा के आरोपों पर पलटवार किया है। साथ ही उन्होंने नाम लिए बिना पायलट गुट पर भी निशाना साधा और कहां कि हमारे विपक्षी लोग कहते हैं कि सीएम कमरे में बंद हैं। उन्होंने पलटवार करते हुए कहा कि अमित शाह, धर्मेंद्र प्रधान और अन्य लोगों की कृपा से हम 34 दिन होटलों में रहे तो बंद कैसे रहे। आप लोगों की बड़ी कृपा रही। हमारे विधायकों की कृपा से वो टाइम भी निकल गया था।

अभी तक एंटी इंकम्बेंसी नहीं, हमारी पार्टी के लोग ही कई बार बातें कर देते हैं: सीएम गहलोत ने कहा कि अभी तक कोई एंटी इंकम्बेंसी पैदा नहीं हुई है। कुछ हमारे पार्टी के साथी जरूर इधर-उधर की बात कई बार कर देते हैं। हमने काम में कोई कमी नहीं रखी। पता नहीं आगे क्या होगा, लेकिन इस बार जनता का मूड वापसी का है। दो बार में एक बार हम 56 पर आए, दूसरी बार 21 पर। हमने दोनों बार काम में कोई कसर नहीं रखी थी। अब लगता है रिपीट होंगे।

गवर्नर साहब लंबी पारी खेल चुके हैं, केवल मुख्यमंत्री बनना बाकी रहाः सीएम गहलोत ने कहा कि विपक्ष के साथियों को हम साथ लेकर चलते हैं। बीजेपी आरएसएस ने 60 साल बाद गांधी को अपनाया है। गांधी की हत्या करने वाला भी इन्हीं की विचारधारा का था। मोहन भागवत, पीएम मोदी और अमित शाह से कहना चाहूंगा कि वे अब देश से माफी मांगे या न मांगें, लेकिन आपके दिल में वही भाव आने चाहिए, जिसकी आप शपथ लेते हो। सत्य, अहिंसा, धर्मनिरपेक्षता के।

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर आयोजित समारोह में पुष्पांजलि करते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत

शासन सचिवालय जयपुर में गांधी जी की प्रतिमा को नमन करते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत।

मुख्यमंत्री ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण किया

बापू के जीवन पर आधारित चित्र प्रदर्शनी का शुभारंभ

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सोमवार को राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड परिसर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की प्रतिमा का अनावरण किया तथा जवाहर कला केंद्र में बापू के जीवन पर आधारित चित्र प्रदर्शनी का शुभारंभ किया।

गहलोत जवाहर लाल नेहरू मार्ग स्थित खादी ग्रामोद्योग बोर्ड परिसर पहुंचे तथा वहां गांधी जी की प्रतिमा का अनावरण कर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया। मुख्यमंत्री ने यहां खादी उत्पादों की प्रदर्शनी को देखा। उन्होंने कतिनों एवं बुनकरों से खादी उत्पादों के बारे में जानकारी ली तथा उनका उत्साहवर्द्धन किया।

इसके बाद मुख्यमंत्री ने जवाहर कला केंद्र की कला दीर्घा में बापू के कृतित्व तथा अहिंसा के दूत के रूप में उनकी लंबी संघर्ष यात्रा को दर्शाती चित्र प्रदर्शनी 'मोहनदास से महात्मा' का उद्घाटन किया। उन्होंने सभी चित्रों का गहनता से अवलोकन किया।

इस अवसर पर उद्योग मंत्री श्री परसादी लाल मीणा, शिक्षा राज्यमंत्री गोविंद सिंह डोटासरा, राज्यसभा सांसद नीरज डांगी, विधायक प्रशांत बैरवा तथा बड़ी संख्या में खादी संस्थाओं के प्रतिनिधि, गांधीवादी चिंतक, विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे।

चिकित्सा मंत्री ने किया जनता क्लिनिक का शुभारंभ

जालोर को दी वर्चुअल माध्यम से जनता क्लिनिक की सौगात

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के स्वस्थ और निरोगी राजस्थान के संकल्प को अमलीजामा पहनाने की दिशा में जनता क्लिनिक खोलने के कार्य को कोरोना संक्रमण में कमी के बाद एक बार फिर शुरू किया जा रहा है। चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने इसी कड़ी में रविवार को वर्चुअल माध्यम से जालोर के लिए जनता क्लिनिक का शुभारंभ किया। राजस्थान में अब तक 12 जनता क्लिनिक जयपुर व 4 जोधपुर में खोले जा चुके हैं।

डॉ. शर्मा ने अपने राजकीय आवास से जालोर के इंडस्ट्रीयल एरिया में जनता क्लिनिक को ऑनलाइन माध्यम से आमजन को समर्पित किया। उन्होंने बताया कि ग्रेनाइट एसोशिएशन के सहयोग से जनता क्लिनिक के लिए जमीन, भवन, एंबुलेंस, आवश्यक फर्नीचर एवं उपकरण की व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि जनता क्लिनिक के प्रारंभ होने से इंडस्ट्रीयल एरिया और आसपास के क्षेत्रों के 20 से 25 हजार रहवासियों के लिए सभी प्रकार की चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी।

चिकित्सा मंत्री ने बताया कि जनता क्लिनिक के माध्यम से आमजन को प्राथमिक चिकित्सा सुविधाएं एवं परामर्श, एएनसी सेवाएं, टीकाकरण सेवाएं, परिवार कल्याण सेवाएं, एनसीडी स्क्रीनिंग सेवाएं, निःशुल्क जांचें (प्राथमिक स्तर), निःशुल्क दवा (प्राथमिक स्तर) आदि सहित लगभग 325 तरह की दवाएं व 8 तरह की जांचें निशुल्क करवाई जा सकेंगी।

डॉ. शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री की वर्ष 2019-20 की बजट घोषणा के अनुसार प्रदेश के अरबन स्लम एरिया, सघन बस्तियों में राजकीय स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित क्षेत्रों में जनता क्लिनिक का संचालन किया जाना था लेकिन कोविड जैसी महामारी के चलते यह कार्य आगे नहीं बढ़ पाया। उन्होंने कहा कि कोरोना संक्रमण कम होने के साथ ही अब प्रदेश में जनता क्लिनिक चरणबद्ध रूप से खोले जाएंगे। उन्होंने ग्रेनाइट एसोशिएशन के अध्यक्ष श्री लालसिंह राठौड़ का इस पुनीत कार्य के लिए आभार व्यक्त किया।

चिकित्सा सचिव वैभव गालरिया उपस्थित रहे, जबकि पर्यावरण मंत्री सुखराम विश्नोई,पूर्व विधायक श्री रामजीलाल मेघवाल, पुखराज पाराशर, मंजू मेघवाल, जालोर जिला कलेक्टर, जनस्वास्थ्य निदेशक डॉ.केके शर्मा, स्थानीय सीएमएचओ व अन्य अधिकारीगण भी वर्चुअली जुड़े रहे।

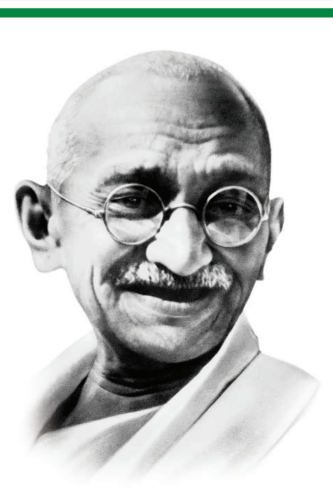

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

"जब कभी आप दुविधा में हों या आपको अपना स्वार्थ प्रबल होता दिखाई दे तो यह नुस्ख़ा आज़मा कर देखिएगा। अपने मन की आंखों के सामने किसी ऐसे गरीब और असहाय व्यक्ति का चेहरा लाइए जिसे आप जानते हों और अपने आप से पूछिए कि क्या आपकी करनी उसके किसी काम आएगी? क्या उसे कुछ लाभ होगा? क्या उस काम से उसे अपना जीवन और भविष्य बनाने में कुछ मदद मिलेगी? बस इतना सोचते ही आपकी सारी दुविधाएं दूर हो जाएंगी।"
–महात्मा गांधी

प्रदेश के जन–जन के हित में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर
2 अक्टूबर, 2021 से शुभारम्भ

प्रशासन
शहरों के संग
अभियान
2 अक्टूबर, 2021 से 31 मार्च, 2022

अभियान की विशेषताएं
- 10 लाख पट्टा वितरण का लक्ष्य
- राहत के लिए विभिन्न नियमों एवं प्रावधानों का सरलीकरण
- आवेदन की तकनीकी सहायता हेतु स्वैच्छिक नगर मित्र की सुविधा
- कार्यों के शीघ्र निस्तारण के लिए निकाय स्तर पर एम्पावर्ड कमेटी का गठन कर शक्तियों का प्रत्यायोजन
- नागरिकों की सहायता हेतु हैल्पडेस्क नम्बर 18001806127
- 213 नगरीय निकाय, 3 विकास प्राधिकरण, 14 नगर सुधार न्यास, राजस्थान हाउसिंग बोर्ड, बीडा सहित 8 विभाग होंगे शामिल

अभियान में 8 विभागों द्वारा किये जाने वाले आमजन से जुड़े प्रमुख कार्य
पट्टे जारी करना (योजना भूमि/सोसायटी/खातेदारी योजनाओं, 69-ए, कच्ची बस्ती, स्टेट ग्रांट) • भवन निर्माण स्वीकृति • भू-रूपांतरण 90-ए की कार्यवाही • नाम हस्तांतरण • उप-विभाजन • पुनर्गठन • लीज राशि जमा कराना • फ्री होल्ड के पट्टे जारी करना • जाति/मूलनिवास/हैसियत प्रमाण पत्र जारी करना • जन्म-मृत्यु, विवाह प्रमाण पत्र जारी करना • इंदिरा क्रेडिट कार्ड/स्वरोजगार हेतु ऋण आवेदन • **समस्त प्रकार की सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं में स्वीकृतियां** • मुख्यमंत्री कन्यादान योजना / पालनहार योजना / सुखद दाम्पत्य योजना में स्वीकृतियां • **मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजनान्तर्गत डोर टू डोर सर्वे अभियान व चिरंजीवी योजना में पंजीकरण से वंचित लाभार्थियों को योजना से जोड़ना** • 30 वर्ष से अधिक के सभी लोगों की स्वास्थ्य जांच

प्रशासन
गांवों के संग
अभियान
2 अक्टूबर, 2021 से 17 दिसम्बर, 2021

अभियान की विशेषताएं
- प्रत्येक ग्राम पंचायत पर शिविरों का आयोजन
- कार्यों की सुगमता के लिए मौके पर मौजूद अधिकारियों को शक्तियों का प्रत्यायोजन
- अभियान की प्रत्येक स्तर पर सतत् मॉनिटरिंग एवं पर्यवेक्षण
- शिविरों में ई-मित्र केन्द्रों पर सभी सुविधाएं **निःशुल्क**

अभियान में 22 विभागों द्वारा किये जाने वाले आमजन से जुड़े प्रमुख कार्य
पूर्व आवंटित बाड़ों के रहवासीय उपयोग प्रकरणों में आवासीय आवंटन • पुराने कदीमी रास्तों का अंकन • आबादी विस्तार हेतु भूमि आवंटन, गैर खातेदारी से खातेदारी अधिकार, राजस्व अभिलेख की निःशुल्क नकलें, अशुद्धियों का सुधार • भूमिहीनों को आवासीय पट्टे जारी करना • प्रधानमंत्री आवास योजना में किश्तों का भुगतान • नरेगा योजना में नवीन जॉब कार्ड • **मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजनान्तर्गत डोर टू डोर सर्वे अभियान व चिरंजीवी योजना में पंजीकरण से वंचित लाभार्थियों को योजना से जोड़ना** • 30 वर्ष से अधिक के सभी लोगों की स्वास्थ्य जांच • हैण्ड पंप मरम्मत एवं स्वच्छ पेयजल पूर्ति • आंगनबाड़ी कार्यकर्ता/सहायिका/आशा सहयोगिनी तथा साथिन के रिक्त पदों पर चयन • ऋण से वंचित पूर्व डिफाल्टर ऋणियों को 200 करोड़ रुपये का ऋण वितरण • 2.5 लाख मृदा स्वास्थ्य कार्ड • विलम्ब भुगतान सरचार्ज में कृषि उपभोक्ता को 100% छूट एवं घरेलू उपभोक्ताओं को 50% छूट • **समस्त प्रकार की सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं में स्वीकृतियां** • मुख्यमंत्री कन्यादान योजना / पालनहार योजना / सुखद दाम्पत्य योजना में स्वीकृतियां • क्षतिग्रस्त सड़कों एवं राजकीय भवनों की मरम्मत

"राज्य सरकार का महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है **'प्रशासन गांवों और शहरों के संग अभियान–2021'** जिसके माध्यम से आमजन से जुड़ी समस्याओं का मौके पर ही समाधान सुनिश्चित किया जाएगा। इस अभियान के लिए जटिलताओं को दूर करते हुए विभिन्न नियमों का सरलीकरण किया गया है। जिससे वर्षों से लंबित कार्यों के पूर्ण होने में सुगमता होगी। इस अभियान के लिए मेरी शुभकामनाएं।"
अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

अभियान अवधि के दौरान राज्य सरकार द्वारा दी जा रही शिथिलताओं का लाभ उठायें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर, गुरुवार, 07 अक्टूबर, 2021

संपादकीय

चीन की दबंगई रोकने के लिए क्वाड के साथ आकस भी आवश्यक, भारत को नहीं होनी चाहिए असहजता

पिछले कुछ दिन हिंद-प्रशांत क्षेत्र को लेकर खासे हलचल भरे बीते हैं। क्वाड और आकस जैसे संगठन इस हलचल के केंद्र में रहे। चूंकि हिंद-प्रशांत क्षेत्र समान विचार वाले लोकतांत्रिक देशों की सहभागिता और सक्रियता वाला ऐसा क्षेत्र है, जिनका उद्देश्य निरंतर निरंकुश होते चीन पर कुछ अंकुश लगाना है तो ऐसे देशों के इन दोनों संगठनों से यही अपेक्षाएं भी लगी हुई हैं। इस बीच अचानक से अस्तित्व में आए आकस ने अवश्य कुछ चौंकाने का काम किया है। आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और अमेरिका के इस नए संगठन को लेकर आलोचना की जा रही है कि जब अमेरिका और आस्ट्रेलिया जैसे देश पहले से ही क्वाड के सदस्य हैं, तो फिर इस नए संगठन की क्या आवश्यकता थी? यदि ब्रिटेन को ही साथ लाना था तो क्वाड का विस्तार किया जा सकता था। जो लोग इन बिंदुओं पर आकस की आलोचना और इससे क्वाड के राह भटकने की बात कर रहे हैं वे सही नहीं हैं।

सबसे पहली बात तो यही कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती दबंगई और उसकी काट के लिए जारी अमेरिकी प्रयासों के बीच इतनी गुंजाइश अवश्य है कि उसमें एक से अधिक संगठन सक्रिय रह सकें। ऐसे में आकस और क्वाड के समांतर रूप से संचालन में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। हमें इन संगठनों की मूल प्रकृति को समझना होगा। जहां क्वाड एक व्यापक विस्तार और साझेदारी वाला संगठन है, वहीं आकस विशुद्ध रूप से सामरिक साझेदारी का मंच। जिन्हें लगता है कि अमेरिका ने बहुत जल्दबाजी में आकस के गठन की दिशा में कदम बढ़ाए, उन्हें अमेरिकी तत्परता की वजह भी समझनी चाहिए।

दरअसल, अफगानिस्तान से अपने सैनिकों की वापसी के बाद अमेरिका के बारे में यही धारणा बनती दिख रही थी कि वह अपने अन्य साझेदारों को भी अधर में छोड़ सकता है। ऐसे में इस धारणा को तोड़ने और अपने साथियों में भरोसा जगाने के लिए ही अमेरिका ने आकस की संकल्पना को जल्दी से साकार किया। इसीलिए परमाणु शक्तिसंपन्न राष्ट्र न होने बावजूद आस्ट्रेलिया को अमेरिका से परमाणु पनडुब्बियां मिलने जा रही हैं। इसके लिए अमेरिका ने फ्रांस जैसे पुराने साथी के कुपित होने की परवाह भी नहीं की। दरअसल कोरोना काल से ही आस्ट्रेलिया की चीन से अदावत चल रही है। इस स्थिति में उसे अमेरिका से किसी ठोस समर्थन की आवश्यकता थी। अमेरिका ने भी उसे निराश न कर यही संदेश दिया है कि वह अपने साथियों को मझधार में नहीं छोड़ेगा। वहीं आस्ट्रेलिया ने चीन को स्पष्ट संदेश दे दिया है कि वह भले ही कई मामलों में उस पर निर्भर है, लेकिन उसकी आक्रामकता को कतई बर्दाश्त नहीं करेगा। आस्ट्रेलिया ने इसमें कोई मध्यमार्गी विकल्प न चुनकर एक स्पष्ट रुख अख्तियार किया है। उधर ब्रेक्जिट के बाद से ब्रिटेन भी हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नए सिरे से सक्रियता बढ़ाने की तैयारी में था। वैसे भी ये तीनों देश पुराने सहयोगी और साझेदार हैं। ऐसे में आकस पुराने और स्वाभाविक साथियों की सहभागिता का एक नया मंच ही है।

किसी भी क्रिया की प्रतिक्रिया निश्चित होती है। आकस के मामले में भी यही हुआ। इस साझेदारी और आस्ट्रेलिया के साथ रक्षा करार से बाहर होने पर फ्रांस ने बहुत तल्ख तेवर दिखाए। केवल फ्रांस ही नहीं, बल्कि यूरोपीय संघ को भी यह नागवार गुजरा। भारत में भी एक

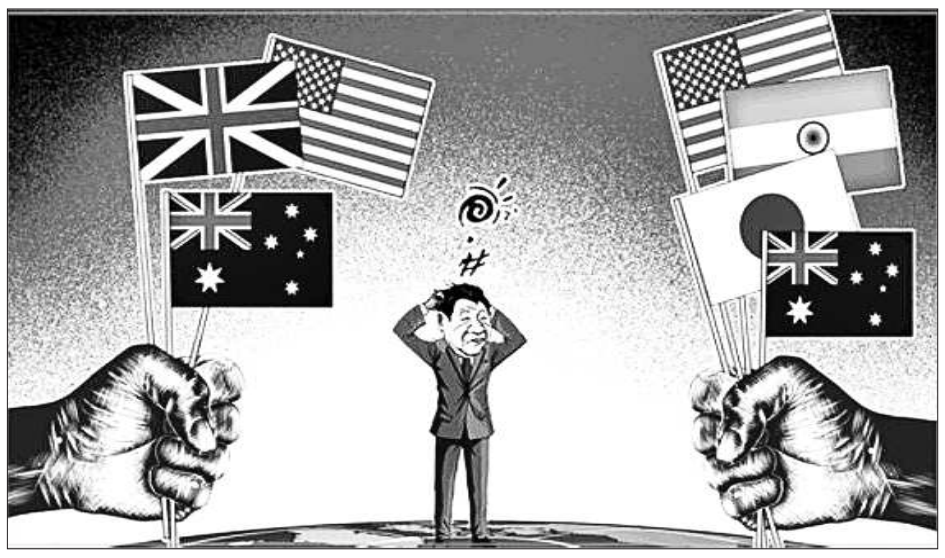

तबके ने सवाल उठाए कि अमेरिका जो तकनीक भारत को देने के लिए तैयार नहीं, वह आस्ट्रेलिया को देने जा रहा है। यहां तक बातें हुईं कि आकस के अस्तित्व से क्वाड हाशिये पर चला जाएगा। ऐसी आपत्तियां वास्तव में अनुचित हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आस्ट्रेलिया और जापान जैसे देशों के साथ अमेरिका का पहले से ही सुरक्षा को लेकर समझौता है। इससे अमेरिका द्वारा आस्ट्रेलिया को उपरोक्त तकनीक हस्तांतरण में कोई बाधा नहीं। जबकि भारत का अमेरिका से ऐसा कोई करार नहीं है। वस्तुतः आकस पर आपत्ति जताने के बजाय उसके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह देखना चाहिए कि उसके गठन से चीन कैसे तिलमिलाया है? बीजिंग को अहसास हुआ है कि आस्ट्रेलिया जैसी क्षेत्रीय शक्ति भी उसके खिलाफ निर्णायक फैसला कर बिगुल बजाने की क्षमता रखती है। भारत के नजरिये से देखें तो चीन पर दबाव बनाने वाली ऐसी कोई भी पहल उसके लिए उपयोगी ही कही जाएगी।

जिन लोगों को यह चिंता सता रही है कि आकस के कारण क्वाड किनारे लगा दिया जाएगा उन्हें यह समझना चाहिए कि आकस जैसी सामरिक साझेदारी के उलट क्वाड व्यापक सहयोग वाली विस्तारित अवधारणा है। बीते दिनों क्वाड राष्ट्रप्रमुखों की बैठक में बनी सहमति के बिंदुओं से भी यह स्पष्ट दिखता है। उसमें अवसंरचना विकास, जलवायु परिवर्तन से लेकर निवेश जैसे बिंदुओं पर चर्चा की गई। क्वाड वैश्विक महत्व के अहम बिंदुओं पर समग्रता में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध दिखता है। जैसे यूरोपीय संघ के साथ वह कनेक्टिविटी के मसले पर सहयोग बढ़ाना चाहता है। दक्षिण कोरिया जैसे देश के साथ सेमीकंडक्टर उत्पादन में आगे बढ़ने की संभावनाएं तलाश रहा है तो आसियान देशों को साथ लाकर व्यापारिक मोर्चे को मजबूत बनाना चाहता है। ऐसे में यदि क्वाड में सामरिक साडेदारी का तत्व जोड़ेंगे तो तमाम संभावित साझेदार देशों के लिए इस संगठन के साथ औपचारिक रूप से जुड़ना कुछ असहज हो जाएगा। यही कारण है कि क्वाड चीन की अपनी तरह से घेराबंदी कर रहा है तो आकस उस पर अपने हिसाब से शिकंजा कसेगा। ये दोनों संगठन भले ही अलग हों, लेकिन उनका मूल मकसद एक ही है और वह है विश्व को विस्तारवादी, अड़ियल और तानाशाह चीन की दबंगई से बचाना और वैश्विक ढांचे को संतुलित करना। क्वाड के सदस्य भारत जैसे देश की आकस को लेकर कोई असहजता नहीं होनी चाहिए। वास्तव में चीन पर किसी भी प्रकार से बनाया जा रहा दबाब भारत के लिए अच्छा ही है। इस बीच भारत को चाहिए कि वह इन नई साडोदारियों से फ्रांस जैसे जो पुराने सहयोगी छिटक रहे हैं, उन्हें मनाने और साधने में मध्यस्थता करने के प्रयास करे ताकि चीन के खिलाफ न केवल मोर्चा और मजबूत किया जा सके, बल्कि उसमें किसी भी तरह के बिखराव की आशंका भी समाप्त हो जाएं।

क्या मुझे भी डसना आना चाहिये?

साँप के डसने से आतंकित जीवजन्तु ख़ुदा के पास पहुँचे। ख़ुदा ने ताक़त का ग़लत इस्तेमाल करने से नाराज़ होकर साँप की डसने और ज़हर की शक्ति छीन ली।

अब हुआ यूँ कि जहाँ साँप निकलता हर कोई उसको पकड़ कर मार डालता, उसको खिलौना बना डालता, उसका डर लोगों के दिमाग़ से जाता रहा ।

साँप ने अपनी नस्लें ख़त्म हो जाने की गुहार लगाई तो ख़ुदा ने उसे वापिस डसने के साथ साथ फुफकारने की ताक़त भी दे दी और सचेत किया कि तब तक किसी को मत डसो जब तक तुम्हारी जान पर नहीं बन आये, पहले फुफकारो, सामने वाला बाज़ नहीं आये तो दाँत गढ़ा दो।

आज हालत यह है कि साँप के फुफकारने से ही लोगों में दहशत हो जाती है ।

छबड़ा में हमने अपनी 30 सालों की अथक मेहनत से बहुत कुछ हासिल किया, बहुत संघर्ष किया जो आज भी जारी है ।

अपने वालिद के सबक़ हमेशा दिमाग़ में रखते हुए ईमानदारी से अपनी पुश्तैनी ज़मीन पर कॉलोनियाँ विकसित करता आ रहा हूँ।

बहुत से दोस्तों, साथियों, अच्छे-बुरे इंसानों और तजुर्बों से गुज़रता हुआ मैंने धैर्य ओर संयम बनाये रखा है और यही अपने सहयोगियों को समझाया है।

ऐसा नहीं कि सब कुछ मुझसे ठीक ही रहा कई जगह ग़लतियाँ भी हुईं लेकिन जानबूझ कर कभी किसी के साथ बेईमानी, नाइंसाफ़ी नहीं की ।

इस दौरान स्वार्थी, बेईमान, झूठे भृष्ट लोगों से भी वास्ता पड़ता रहता है जो हमारी सफलता, उपलब्धियों से ईर्ष्या करने या कुछ हासिल करने की चाह में हमारे विरुद्ध साज़िशें रचते रहे, हमें ग़लत साबित करने की कोशिश करते रहे लेकिन हम हमेशा उनकी साज़िशों से बेदाग़ निकलते आये हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि उनकी वजह से हमें नुकसान सहन नहीं करना पड़ा हो, बेशक नुक़सान सहन करना पड़ा है, क़ीमती वक्त ख़राब हुआ है, कई जगह पीछे हट कर अच्छे वक़्त का इंतज़ार करना पड़ा है ।

स्वभाव से गुस्सैल अवश्य हूँ, नुक़सान होने पर तिलमिलाता हूँ, झूठे इल्ज़ाम बर्दाश्त नहीं कर पाता हूँ, इच्छा मेरी भी उनसे बदला लेने की होती है लेकिन आज तक किसी का बुरा नहीं कर सका ।

दरअसल मुझे अपने मिशन, किताबों, दुनिया भर के प्यार और बच्चों के साथ ही दिन भर का वक्त कम पड़ता है ।

सोचता हूँ कहाँ नकारात्मकता, बदले की भावना, नफ़रत को वक्त देकर उन लोगों की अहमियत बढाऊँ, अपना क़ीमती वक़्त बर्बाद करूँ इन वजहों से ख़ामोश हो जाता हूँ ।

अच्छा दोस्त भले ही नहीं होऊँ लेकिन अच्छा दुश्मन किसी का नहीं बन सका, बहुत जल्दी किसी को भी माफ़ कर देता हूँ ।

राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक रूप से मज़बूत होने के बावजूद कभी किसी पर हमला नहीं किया मात्र अपना और अपनी पुश्तैनी भूमि की हिफ़ाज़त करता रहा।

कई बार तो उन विरोधियों को उस समय माफ किया जब मैं हर तरह से शक्तिशाली था परन्तु मेरी इस उदार नीति से यह नतीजा निकला कि हर कोई कहीं से भी चलते फिरते मुझ पर पत्थर फैंकने से नहीं डरता ।

एक कहावत है- सत्य को परेशान किया जा सकता है पराजित नहीं ।

हम ने कभी इनके ब्लैकमेलिंग के सामने हथियार नहीं डाले, हालांकि हमें बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता रहा है जिससे नहीं चाहते हुए भी मन से उनके लिए हाय अवश्य निकलती है और मैं ने ऐसे लोगों को बर्बाद होते देखा है, हमेशा परेशान देखा है, कहीं दूसरी जगह नुक़सान उठाते देखा है ।

ये ज़ालिम नहीं जानते कि मज़लूमों की हाय कितनी ख़तरनाक होती है ....

ज़ालिम ये डुबो देंगे
तेरे जुल्म की कश्ती
आँसू किसी मज़लूम की
आँखों से निकल कर !!

फिर से मेरा सवाल
क्या हमें इसी तरह कमज़ोर बना रह कर हमले झेलते रहना चाहिये..
या उनके अंदाज़ में उन्हें जवाब देना चाहिये ?

रिज़वान ऐज़ाज़ी

डॉगी से हमारा रिश्ता कैसे हो मज़बूत

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार,

बच्चों, पहली-दूसरी शताब्दी में , जब सेनाओं की बड़ी-बड़ी पलटनें यूरोप कॉन्टिनेंट में मार्च किया करती थीं, उनकी क्षुधा शांत करने के लिए बड़ी तादाद में एल्प्स पर्वत से लाइवस्टॉक लाया जाता था । तब रोमन चरवाहों को हर्डिंग के लिए इटेलियन-मैस्टिफ़ टाइप के मलॉसस डॉग्स की मदद लेनी पड़ती थी । लेकिन धीरे-धीरे जब कैटल ख़त्म होने लगे , तो इन डॉग्स की ज़रूरत भी कम महसूस होने लगी। नतीजतन इन्हें काफ़ी बड़ी तादाद में लावारिस छोड़ दिया गया जिससे इनकी संख्या भी कम होने लगी और ये जर्मनी की 'राइन' नदी की ट्रिब्यूटरी 'नेकर' नदी पर बसे 'रॉटवाइल ' नामक स्थान पर भटकते हुए ज़िंदगी गुज़ारने लगे। फिर वहॉ के बूचर्स की नज़र इन पर पड़ी और वो इन्हें शहर से मवेशी ख़रीद कर लाने में इनकी सहायता लेने लगे । ये जानना आपको बहुत मज़ेदार लगेगा कि शहर की तरफ़ जाते वक़्त वो लोग अपने मनी को रॉबर्स से बचाने के लिए उसे इन डॉग्स की गर्दन में बॉध दिया करते थे और ख़रीद-फ़रोख़्त पूरी होने पर लौटते समय मवेशी की ज़िम्मेदारी इन डॉग्स पर सौंप दिया करते थे । अपनी खूबियों की वजह से इन्होंने जल्दी ही उस कम्यूनिटी में लोकप्रियता हासिल कर ली । तब ही 'रॉटवाइल' में पाये जाने के कारण इन्होंने ये नाम पाया - 'रॉटवाइलर' ।

उन्नीसवीं शताब्दी का अंत आते आते मवेशियों को लाने ले जाने के लिए ट्रेन का इस्तेमाल किया जाने लगा, जिसकी वजह से इस ब्रीड का वजूद ख़तरे में आने लगा था । लेकिन कुछ ब्रीडर्स की दूरदर्शिता ने इन्हें बचा लिया ।

इन्हें पुलिस-डॉग, गार्ड-डॉग, गाइड-डॉग इत्यादि के रूप में बहुतायत से इस्तेमाल किया जाने लगा और ये बेहद बुद्धिमान और केयरिंग डॉग्स के प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार,

बच्चों, पहली-दूसरी शताब्दी में , जब सेनाओं की बड़ी-बड़ी पलटनें यूरोप कॉन्टिनेंट में मार्च किया करती थीं, उनकी क्षुधा शांत करने के लिए बड़ी तादाद में एल्प्स पर्वत से लाइवस्टॉक लाया जाता था । तब रोमन चरवाहों को हर्डिंग के लिए इटेलियन-मैस्टिफ़ टाइप के मलॉसस डॉग्स की मदद लेनी पड़ती थी । लेकिन धीरे-धीरे जब कैटल ख़त्म होने लगे , तो इन डॉग्स की ज़रूरत भी कम महसूस होने लगी। नतीजतन इन्हें काफ़ी बड़ी तादाद में लावारिस छोड़ दिया गया जिससे इनकी संख्या भी कम होने लगी और ये जर्मनी की 'राइन' नदी की ट्रिब्यूटरी 'नेकर' नदी पर बसे 'रॉटवाइल ' नामक स्थान पर भटकते हुए ज़िंदगी गुज़ारने लगे। फिर वहॉ के बूचर्स की नज़र इन पर पड़ी और वो इन्हें शहर से मवेशी ख़रीद कर लाने में इनकी सहायता लेने लगे । ये जानना आपको बहुत मज़ेदार लगेगा कि वो लोग अपने मनी को रॉबर्स से बचाने के लिए उसे इन डॉग्स की गर्दन में बॉध दिया करते थे । अपनी खूबियों की वजह से इन्होंने जल्दी ही उस कम्यूनिटी में लोकप्रियता हासिल कर ली । तब ही 'रॉटवाइल' में पाये जाने के कारण इन्होंने ये नाम पाया -'रॉटवाइलर'। कैनल-क्लब के सबसे बड़े इंटरनैशनल फ़ेडरेशन 'एफ़-सी-आई ' के अनुसार ये सबसे पुरानी ब्रीड्स में से एक है।

उन्नीसवीं शताब्दी ख़त्म होते होते यातायात के महत्वपूर्ण साधन ट्रेनों का आगमन होने से अब मवेशियों को लाने ले जाने में भी ट्रेन्स का इस्तेमाल होने लगा था और इनका वजूद ख़तरे में पड़ गया था । अपने कार्य के दौरान रॉटवाइलर्स ने बुद्धिमत्ता और केयरिंग एटीट्यूड का प्रदर्शन किया था । कुछ ब्रीडर्स ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए इन्हें बचाने का बीड़ा उठाया । इन्हें बहुतायत से कॉन्टिनेंट में यूज़ किया जाने लगा। उन्नीस सौ पचास के क़रीब इन्हें इंग्लैंड लाया गया और पुलिस-डॉग्स, गार्ड-डॉग्स, गाइड-डॉग्स इत्यादि के रूप में इनका उपयोग किया जाने लगा।

काले या गहरे भूरे रंग में पाये जाने वाले रॉटवाइलर्स का चौबीस से सत्ताइस इंच क़द और अस्सी से एक सौ पैंतीस किलो तक वजन हो सकता है । आठ से दस वर्ष तक ये जीते हैं।

कभी यूरोप के पहाड़ों में भटकने वाली ये ब्रीड आज यूके, यूएस सहित संपूर्ण विश्व में लोकप्रिय है।

-डॉ. कविता माथुर

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

03

जयपुर, गुरुवार, 07 अक्टूबर, 2021

विनोबा और शास्त्रीजी की प्रेरक मुलाकात

कुलदीप शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

वीणा वैरागी 'हृदय जोड़ने वाला बाबा' में लिखती हैं कि 'लालबहादुर शास्त्री नये प्रधानमंत्री बनते ही 16 जून, 1964 को बाबा से मिलने जामनी गांव पहुंचे। (तब बाबा महाराष्ट्र के वर्धा जिले के गांवों में ग्रामदान का संदेश लेकर घूम रहे थे) छोटे -से गांव में आने के लिए रास्ता भी ठीक नहीं था लेकिन शास्त्री जी का आदर्श भी कम नहीं है। वे दो मील पैदल चलकर नाला पार होकर, साथ सुरक्षा दल न लेते हुए बाबा से मिले।'

अड़तीस साल तक विनोबा जी के निजी सचिव रहे और सर्वोदय के वयोवृद्ध कर्मयोद्धा आदरणीय बाल विजय भाई इस विशिष्ट मुलाकात के साक्षी रहे हैं।

उन्होंने विनोबा और शास्त्रीजी की इस मुलाकात का यह संस्मरण मुझे जयपुर में बजाजनगर स्थित खादी एवं ग्रामोद्योग संस्थासंघ परिसर में अपने प्रवास के दौरान सुनाया था। बाल विजय जी से यह संस्मरण सुनना मेरे लिए बहुत सौभाग्य का विषय था।

बाल विजय जी ने बताया था कि 'शास्त्रीजी प्रधानमंत्री बनने के तुरंत बाद विनोबा से मिलना चाहते थे। लेकिन उन्हें दिल्ली में अधिकारियों ने कहा कि विनोबा एक बहुत छोटे से गांव में हैं, कोई सुविधा नहीं है। सड़क, बिजली कुछ भी नहीं है, भारी बारिश का दौर है, जीप भी पहुंचना मुश्किल है। '

इस पर शास्त्रीजी ने कहा कि जहाँ बाबा रह सकते हैं, वहां मैं क्यों नहीं जा सकता ?

शास्त्रीजी जी बाबा से मिलने आये। नाले के पहले ही जीप छोड़ दी। पैदल चले और जूतियां उतार धोती ऊंची कर ली। जूतियाँ किसी सहायक को नहीं दीं।

कीचड़ भरी गलियों में से होकर वे बाबा के पास पहुंचे महापुरुष बाबा एक गरीब किसान की झोपड़ी में रूके हुए थे। छोटी -सी झोंपड़ी में दरी बिछी थी और बाहर भैंस बंधी थी, वहीं कोने में चारा पड़ा था। दोनों मनीषियों की मुलाकात उसी माहौल में हुई। शास्त्रीजी जी भी उसी दरी पर बैठ गये। दोनों मनीषियों में बहुत भावनात्मक माहौल में बातचीत हुई।'

ज्ञातव्य है कि विनोबा और शास्त्रीजी की यह पहली मुलाक़ात नहीं थी। शास्त्रीजी 'भूदान यात्रा' के दौरान भी विनोबा के संपर्क में रहते थे। वे ओडिशा के ब्रह्मपुर में भी विनोबा से मिले थे।जामनी गांव से शास्त्रीजी जी वापस पैदल चलकर अपनी जीप के पास उसी तरह पहुंचे, जैसे आये थे। नागपुर पहुंच कर शास्त्रीजी ने शाम को एक विशाल जनसभा को संबोधित किया। सत्ताईस मई, 1964 को नेहरू जी के निधन के बाद शास्त्रीजी 9 जून को प्रधानमंत्री बने थे। वे इसके आठवें रोज ही बाबा से मिलने पहुंचे थे। प्रधानमंत्री बनने के बाद अपनी पहली जनसभा में शास्त्रीजी बाबा से मुलाकात का ज़िक्र करते हुए भाव -विभोर हो उठे।

गाँधी एवं गीता

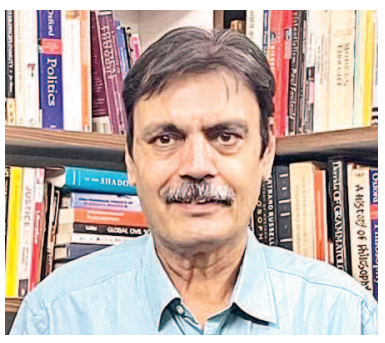

नरेश दाधीच

हालांकि गाँधी ने गीता, उपनिषद् और पातंजलि के योग सूत्र को हिंदू दर्शन का महत्त्वपूर्ण अंग बतलाया है।लेकिन गीता के प्रति उनका अनुराग अधिक था। गाँधी ने कहा है कि गीता मेरे जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है वह कामधेनु की तरह है तथा एक सार्वभौमिक माता की तरह है जिसके दरवाजे हमेशा खुले हैं और जो भी उस पर दस्तक देता है उसका कल्याण करती है। वह मानते हैं कि गीता से हमें वह शान्ति मिलती है जो सर्मन ऑन द माउंट से भी नहीं मिलती है। जिस प्रकार जब हम किसी शब्द का अर्थ समझना चाहते हैं हम शब्दकोश को देखते हैं उसी प्रकार से गाँधी अपनी किसी भी समस्या का समाधान गीता में खोजते हैं। गाँधी ने सबसे पहले 1888- 1889 में एडमंड अर्नोल्ड के अंग्रेजी रूपातंरण के रूप में गीता का अध्ययन किया हालांकि बाद में उन्होंने गीता पर प्रचलित सभी टीकाओं का अध्ययन किया और संस्कृत में भी उसका अध्ययन किया। उन्होंने गीता के दूसरे अध्याय के अंतिम 19 सूत्रों के सस्वर पाठ को अपने सुबह और शाम की प्रार्थना सभाओं का हिस्सा बनाया। गाँधी ने जेल में अपने अंतिम काल में गीता का अध्ययन कर उसका गुजराती में अनुवाद किया और उस पर अपनी टिप्पणी भी लिखी जिसको उन्होंने अनासक्ति योग के शीर्षक से प्रकाशित किया। गुजराती में लिखी टिप्पणी को महादेव देसाई ने अंग्रेजी में अनुवादित किया और दोनों ने मिलकर गीता अकोर्डिंग गाँधी के नाम से 1946 में नवजीवन अहमदाबाद से इसे प्रकाशित किया।

इसी प्रकार यर्वदा जेल में गाँधी ने अपने आश्रम के सदस्यों को पत्रों की एक श्रृंखला लिखी जिसमें प्रत्येक पत्र गीता के एक अध्याय को समर्पित था। इन पत्रों का मूल गुजराती से अंग्रेजी में वालजी ओविंद जी देसाई ने अनुवाद किया और डिसकोसिस ऑन दी गीता के नाम से नवजीवन 1960 में प्रकाशित हुआ ।

गाँधी गीता के दर्शन से प्रभावित थे और उनकी कई दार्शनिक मान्यताएं गीता के दर्शन में छुपी मान्यताओं के समान हैं जैसे गाँधी के ईश्वर के विचार,गीता में वर्णित ईश्वर की संकल्पना के समकक्ष है। गीता में ब्रह्म के दो पक्ष बतलाये गये हैं एक वैयक्तिक और एक गैर वैयक्तिक, गाँधी ने भी ईश्वर के कानून एवं कानून बनाने वाले दोनों स्वरूपों को स्वीकार किया है। गाँधी ने सत्य को ईश्वर के रूप में परिभाषित किया है और कहा है कि मैं ईश्वर को एक व्यक्ति नहीं मानता मेरे लिए सत्य ही ईश्वर है ईश्वर ही कानून है और इनमें कोई अंतर नहीं हैं। धरती पर एक राजा और उसके कानून में अंतर हो सकता है लेकिन ईश्वर चूंकि एक विचार है इसलिए वह स्वयं ही कानून है और स्वयं ही कानून क्रियान्वित करने वाली संस्था है। दूसरे स्तर पर गाँधी व्यक्तिगत ईश्वर की कल्पना भी प्रस्तुत करते हैं जो गीता में भी प्रदर्शित होती है। गाँधी ने गीता के सामाजिक नैतिक दर्शन का निष्कर्ष निकालते हुए कहा है कि गीता को एक शब्द में समझा जा सकता है और वह है अनासक्ति योग अर्थात किसी के प्रति आसक्त न होने का पथ। गाँधी ने इसे ही गीता का प्रमुख संदेश माना है।

गीता का उपदेश दो आदर्शों के मध्य में एक स्वर्णिम रास्ता खोजना है और ये दो आदर्श है प्रवृत्ति एवं निवृत्ति या कर्म और विचार। सच्चा कर्मयोगी वह है जो इन दोनों आदर्शों को अपने में समाहित करता है। कर्मयोगी वह है जो अपने कर्म को नहीं छोड़ता है वह मोक्ष प्राप्त करने के लिए कर्म में लिप्त है। गाँधी ने इस सिद्धान्त को गीता की शिक्षा बतलाया है। फल की इच्छा न रखना गीता का एक प्रमुख उपदेश माना जाता है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि कर्म करने वाला परिणाम के प्रति उदासीन हो जाये या पूर्णतया इच्छाविहीन बन जाये। इसका अर्थ केवल इतना है कि कर्म में किसी प्रकार का व्यक्तिगत हित साधने की इच्छा नहीं होनी चाहिए। कर्म के फल की इच्छा न रखने का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति कर्म करते समय उसकी इच्छा के प्रति बिलकुल उदासीन हो अगर ऐसा है तो कर्म करना असंभव हो जायेगा इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति को उस कर्म के परिणाम के प्रति किसी प्रकार की आंशका नहीं है और दृढ़ विश्वास है कि उसके कर्म का सही परिणाम निकलेगा।फल की इच्छा न रखने का अर्थ यह है कि वह केवल फल को प्राप्त करने के लिए कर्म न करे। जो केवल कर्म में ही पूरा ध्यान देगा फल स्वतः ही उसके पास आयेगा। गाँधी ने एक सच्चे योगी के तीन न छुपने वाले चिह्न बतलाये हैं-

1.स्थितप्रज्ञ

2. कर्म में कौशल

3. ईश्वर के प्रति अविभाज्य भक्ति

एक योगी में ये तीनों बातें समन्वित होती हैं। गाँधी ने गीता की व्याख्या करते हुए उसे भी अपने जीवन दर्शन अहिंसा के अनुरूप बतलाया है। उनके अनुसार गीता का संदेश दूसरे अध्याय में मिलता है जिसमें कृष्ण बुद्धि के संतुलित स्थिति की चर्चा करते हैं। इसमें कृष्ण यह बतलाते हैं कि मनुष्य संतुलित अवस्था तभी प्राप्त कर सकता है जब वह अपने सभी मनोभाव को समाप्त कर दे। गाँधी के अनुसार अगर व्यक्ति अपने सभी मनोभाव को समाप्त कर देता है तो वह उसके पश्चात् अपने भाई की हत्या नहीं कर सकता क्योंकि हत्या या हिंसा क्रोध और घृणा से उत्पन्न होती है। इसलिए गाँधी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि कृष्ण जिस युद्ध की बात कर रहे हैं वह एक आध्यात्मिक युद्ध है। गाँधी ने गीता में अहिंसा का पाठ समझने के लिए उसकी लाक्षणिक व्याख्या की है। जिसके अनुसार गीता कोई ऐतिहासिक डिस्कोर्स नहीं है जहां पर भाईयों के मध्य में युद्ध हो रहा हो यह वास्तव में एक आध्यात्मिक कल्पना है जिसमें अच्छाई और बुराई के मध्य युद्ध हो रहा है और एक कहानी के माध्यम से नैतिक मान्यताओं को स्थापित किया जा रहा है।

गांधीः व्यवहारिक सम्भावना

रास बिहारी गौड़

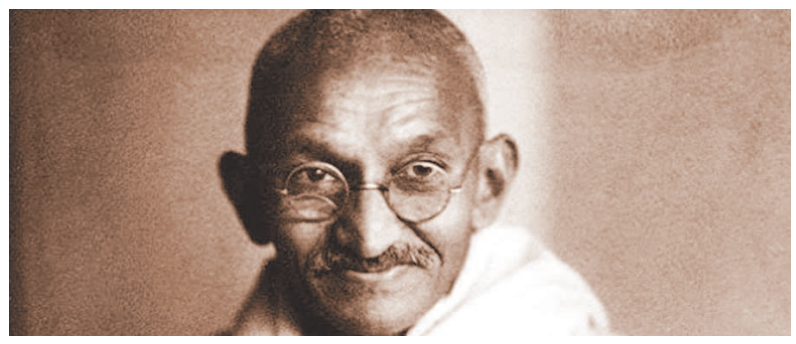

बड़ी आसानी से कह देते हैं हम कि गाँधी आदर्श हैं, व्यवहारिक नहीं। कभी आधुनिकता के नाम पर तो कभी असम्भव होने की शर्त पर हम गाँधी को अपने दूर करते रहते हैं।

जबकि गाँधी जितने व्यवहारिक हैं उतने ही आधुनिक और सम्भव भी हैं। सच तो ये है वे आधुनिकता और संभावनाओं को समय के पार जाकर रचते हैं।तभी तो दुनिया के आधुनिकतम कहे जाने वाले देश भी गाँधी को बार-बार याद करते हुए अपने आप को सही ठहराने की कोशिश करते हैं।गाँधी के जाने के बाद भी उसकी नज़रो में टिके रहना चाहते हैं।वह चाहे अमेरिका सरीखा वैश्विक सत्ताधीश हो या फिर साम्राज्यवाद का सबसे बड़ा पुरोधा ब्रिटेन या जर्मनी यहाँ तक कि दुनिया भर का हिंसक समाज भी गाँधी के सामने सीधा खड़ा नहीं हो पाता।वे जिन्होंने गाँधी के होने को अपने लिए ख़तरा माना वे तक उसकी शरण में अपनी सुरक्षा ढूँढते हैं।

गाँधी होने या गाँधी के अनुकरण का मतलब यह नहीं है कि धोती-लँगोटी पहन कर सड़कों पर निकलना,चरखा कातना,आश्रम में रहना,प्रार्थना सभा।में जाना, राजनीतिज्ञ होना या संत होना यह सब नहीं है कतई नहीं है। गाँधी के अनुकरण का अर्थ है कमज़ोर आदमी की ताक़त बनना।शोषण के विरुद्ध आवाज़ बनना।निज को सर्व में बदलना।अपने भीतर अपना बल पैदा करना।पर-पीड़ा को अनुभूत करना।अहंकार से दूर रहकर विरोध को स्वीकाराना,प्रेम के मूल मंत्र को बार-बार जपना

गाँधी को अव्यवहारिक मानने वाले या तो राजनीतिक नारों से संचालित होते हैं या फिर वे गाँधी को किताबों से बाहर नहीं देख पाते या फिर वे मूल्यों की व्याख्या अपनी सुविधा से कर लेते हैं।ये सब हम ही हैं।हमारे ही आस पास हैं।हमारा डर, हमारा मोह, हमारी निजता हमें बाहर नहीं झाँकने देती।हम समाज की इकाई होते हुए समाज के लिए समग्र सोच नहीं रख पाते। हम पूँजी या पहचान की आभासी चमक को उजाला मानने लगते हैं। हम नैतिक बल को दूसरे बलों के सापेक्ष क्षीण मानते हैं। परिणाम हम हर पल असुरक्षित महसूस करते हैं।डर को पोषित करते हैं।भौतिक-सामाजिक -राजनैतिक परतंत्रता को भोगते हुए ख़त्म हो जाते हैं। सही मायने में गाँधी होने या अनुकरण के अर्थ ही स्वतंत्रता के अर्थ को जीना है। गाँधी उन सबके लिए अव्यवहारिक एवं असम्भव हैं जो अपने आप को कभी अपनी नज़रों से नहीं देखना चाहते।जब आँखे अपनी नहीं तो वे अनुकरणीय भी नहीं रह जाते। गाँधी अपने अर्थों में सबसे अधिक अनुकरणीय, व्यवहारिक और सम्भव हैं।

(वर्ल्ड स्माइल डे पर विशेष)

'आज कोई मुझे देख कर मुस्कुराया, और मैं भी मुस्कुराने लगी'

डॉ भारती प्रकाश, एसोसिएट प्रोफेसर

सुखद महसूस करने पर लोग आमतौर पर मुस्कुराते हैं। मुस्कान तब आती है जब हमारा मस्तिष्क अच्छा महसूस करता है।यह हमारे चेहरे की मांसपेशियों को संदेश भेजता है जो हमें मुस्कुराने के लिए कहती हैं और हम मुस्कुराते हैं और अपने मस्तिष्क को बताते हैं कि हम अच्छा महसूस कर रहे हैं। इसके अलावा, एंडोर्फिन,और सेरोटोनिन का स्राव होता है जो हमें सिर से पैर तक स्वस्थ रखते हैं। यह प्राकृतिक रसायन हमारे मूड को तो अच्छा करते ही हैं, इसके साथ ही यह शारीरिक दर्द को कम करते हैं और शरीर को आराम देते हैं।

मुस्कुराने के बारे में मुझे जो चौंकाने वाला लगता है, वह यह है कि जो लोग नेत्रहीन पैदा होते हैं, वह भी मुस्कुराते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि उन्होंने वास्तव में कभी मुस्कान देखी नही होती लेकिन फिर भी वह उन परिस्थितियों में वैसे ही मुस्कुराते हैं जैसे अन्य लोग। यह साबित करता है कि मुस्कान सुखद भावनाओं की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। या हम यूँ भी कह सकते हैं कि हमें मुस्कुराना सीखना नही पड़ता, यह तो पूर्व क्रमादेशित व्यवहार है।

शोध से यह भी पता चला है कि यदि आप मुस्कुराते हैं तो भले ही आपका मूड खराब हो, वह तुरंत सुधर जाता है। मुस्कुराना एक सरल क्रिया है जो खुश रसायनों को ट्रिगर करता है।आप को विश्वास नही हो रहा? तो इसे आप स्वयं आज़मां कर देखिए। अगली बार जब आपका मूड खराब हो या आप दुखी हों, कभी परेशान हों या उदास हों, किसी गंभीर बहस में हों या किसी की कोई बात बुरी लगे ...तो उस समय एक बार मुस्कुरा कर देखें। इससे आपका मूड बेहतर होगा क्योंकि आप अपने मस्तिष्क को अपने मूड को सुधार करने के लिए छल रहे हैं और वह हार्मोन का स्राव करना शुरू करेगा जो वास्तव में आप के मूड को अच्छा करेगा।

आपकी मुस्कराहट दूसरों को खुशी देने का सबसे बड़ा स्रोत भी है क्योंकि मुस्कान 'संक्रामक' है। आप के होंठों पर खिली मुस्कान को देख कर सामने वाले के चेहरे पर भी मुस्कान आ जाती है। ठीक इसी तरह जब आप का मूड खराब हो और आप को देख कर कोई मुस्कुराए, तो आप भी मुस्कुराते हैं और आप का मूड भी बेहतर हो जाता है।

होंठों पर खिली मुस्कान सिर्फ आपके सौंदर्य को कई गुना बढ़ाती ही नही है, यह लोगों की ज़िन्दगी को रोशन भी करती है। निराश लोगों के लिए यह आशा की किरण होती है और दुखी लोगों के लिए सूर्य की रोशनी।

वहीं जब हम किसी से मुस?कुराते हुए मिलते हैं, तो वह मुलाकात यादगार हो जाती है। मुस?कुराहट संबंधों को ना सिर्फ बेहतर बनाती है बल्कि उन्हें मज़बूत भी करती है।

तो चलिये आज नहीं.... अभी से ही शुरू करते हैं खुद में छिपे इस प्राकृतिक चिकित्सक को पहचानना और इसकी पहचान और चिकित्सकों से कराना।

'मुस्कुराइए.. यह मुफ्त चिकित्सा है।'

Pink#Café

P. No, 541, Lane Number 6, near Shani Mandir, Raja Park, Jaipur, Rajasthan

A place With Lush green, open mic arena
and delicious food with beautiful scenic view
is now open for your friends and family
Always there to Celebrate your special days here

25% Discount offer

Go on Instagram handle of "pinkhashtagcafe"
for more details

PINKHASHTAGCAFE

सपना चन्द्रा

गांधी बनाम गांधीगिरी

हर वर्ष की भांति गांधी जयंती दो अक्तूबर को मनाई जायेगी।इतना ही काफी नही है बल्कि गांधी के भारत दर्शन और रामराज्य की कल्पना कहाँ तक सार्थक है हम गांधी को कितना अपना पाये है हमारे जीवन में उनके मुल्यों की क्या भूमिका है ये भी एक खोज की बस्तू है।सिर्फ गांधीगिरी करके गांधी को पा लेने का रास्ता भर नहीं है।गांधी एक व्यक्ति भर नहीं थे पूरी संस्था थे,एक विचारधारा थे।गांधी सनातम धर्म को मानने वाले,सर्वधर्म समभाव ,प्रकृति प्रेमी होने के साथ-साथ अहिंसा के पुजारी भी थे।

आइंस्टीन के कथनानुसार ,क्या आनेवाली पीढ़ियां कभी विश्वास कर पायेगी कि गांधी जैसा एक हाड़ मांस का पुतला उनके देश की मिट्टी में पैदा हुआ था।शायद नहीं ,आज पश्चिमी सभ्यता के रंग में रचे बसे लोगों को इसका अंदाज़ा हो ही नही सकता।गांधी बहुआयामी प्रतिभा से पूर्ण थे।वे एक वकील,लेखक, पत्रकार और संपादक भी थे।

गांधी के विचारों को समझने वाले और उनकी अहिंसा की नीति को विरोध का जरिया बना अपनी बात मनमाने की ताकत देख लोहा मानते आये है।

गांधी ने अपने इसी हथियार के बल पर कई बातें मानने को गोरों को मजबूर भी किया।गांधी से गोरे भी डरा करते थे जिनके पास सिर्फ़ एक दुबली-पतली काया के अलावा कुछ नही था।

उनका मानना था कि दुनिया की हर जंग बिना हथियार के लड़ी जा सकती है और जंग जीती जा सकती है।

उन्होंने हमेशा अहिंसा की मार्ग को ही विश्व शांति के लिए सही ठहराया।उनकी कथनी और करनी में कोई विरोधाभास नही रहा।उन्होने राजनीतिक आंदोलन में भी अहिंसा को ही विरोध के रुप में प्रयोग किया।दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद नीति हो या सत्याग्रह आंदोलन अहिंसा को ही बखूबी प्रयोग में लाया।

विश्व के कई महान व्यक्तियों ने जैसे-मार्टिन लूथर किंग जुनियर,नेलशन मंडेला,अंग सान सू,और दलाई लामा ने भी अहिंसा के मार्ग को अपना कर ही नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित हुए।

हाल की बात की जाए तो अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा को भी गांधी के विचारों को अपना उनके पद चिन्हों पर चलने के कारण नोबेल पुरस्कार उन्हें प्राप्त हुआ।

ये बिडंबना ही है कि हमारे देश में गांधी सत्ता की भेंट चढ़ गये,गांधी के नाम और उनकी टोपी पहनने की होड़ भले मची हो परंतु वास्तविकता की धरातल पर उन लोगों से कोसों दूर है।जिस सत्य और अहिंसा को अपनाकर गांधी ने गोरों को देश छोड़ने पर बाध्य किया उसी देश को कठपुतली बना काले चेहरे वाले अपनी चाँदी चमकाने में लगे है।वो भूल गये है गांधी के संघर्षों को उनके बलिदान को,आज राजनीति एक खिलौना बन कर रह गई है जिससे खेलने वाले बड़े बेखौफ होकर खेलते आए है।

आज जरुरत गांधी को फिर से खंगालने की है उनके आर्दशों और मुल्यों को अपनाने की है।अपने ही देश में विलुप्त हुए गांधी को ढुंढने की है।

कोर्ट मैरिज में इज़ाफ़ा...

प्रेम बजाज,
जगाधरी (यमुनानगर)

जबकि विवाह अधिनियम 1954 के अन्तर्गत भारत के संविधान ने सभी को हक दिया है वो अपनी पसंद की लड़की या लड़के से शादी कर सकते हैं

कोर्ट मैरिज एक विशेष विवाह अधिनियम (special merriage act) के तहत विवाह होता है जिसमें कोई समारोह नहीं होता, केवल सरकारी अधिकारी और दुल्हा-दुल्हन एक डाक्यूमेंट पर हस्ताक्षर करके प्रक्रिया पूरी करते हैं।

पहले शादी के लिए आवेदन किया जाता है, जिसमें 30 दिन का समय होता है, इस अवधि में एल आई यू और संबंधित थाने में रिपोर्ट की जाती है। लड़के की उम्र 21 और लड़की की 18 से कम तो नहीं, कोई पहले से शादीशुदा ना हो, लड़का-लड़की दोनों पक्षों की रज़ामंदी होनी चाहिए, यदि दोनों में से कोई पहले से शादीशुदा हो तो या उसका तलाक होना चाहिए या उसके पति या पत्नी का देहांत हो गया हो, दोनों में से एक स्थायी निवासी हैं या नहीं, उस पर तीन गवाहो की भी गवाही दी जाती है, विवाह के लिए आने वाले हर आवेदन की पूरी जांच कराई जाती है, पूर्ण रूप से संतुष्टि होने के बाद ही शादी का सर्टिफिकेट जारी किया जाता है।

सोचिए क्या कोर्ट आंखें मूंद कर हर किसी को शादी की इज़ाजत दे देता है?

नहीं!

अगर आवेदनकर्ता कोर्ट की हर शर्त पर खरा नहीं उतरता तो आवेदन खारिज भी किया जाता है।

लेकिन कोर्ट मैरिज की नौबत ही क्यों आए, अगर माता-पिता बच्चों की भावनाओं को समझे, और बच्चे भी माता-पिता को समझें।

जहां बेटा या बेटी कुछ ग़लत फैसला लेते हैं उन्हें समझाएं, क्या सही हे क्या ग़लत उन्हें बताएं। बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार रखें,और अगर वो सही है अपनी पसंद से जीवन साथी चुनते हैं तो उनका साथ दे।

बच्चों को भी चाहिए कि माता-पिता से कुछ ना छिपाए, उन्हें अपना दोस्त समझे और हर बात उनसे साझा करें।

यदि हर माता-पिता और बच्चे अपनी सोच को एक-दूसरे पर ना थोप कर एक-दूसरे के साथ कदम से कदम मिलाकर चले तो अवश्य ही माता-पिता के विरुद्ध जाकर कोर्ट मैरिज करने का नाम खत्म हो जाएगा।

कारण क्या है? कानून का विस्तार हुआ है लेकिन कानून आज भी सभी प्रकार के रिश्तों को एक समान सुरक्षा या अधिकार नहीं देता और ना ही एक स्तर की प्राथमिकता।

लेकिन हमारी अपनी सोच क्या है??

क्यों हम विवाह को इसलिए सिरियस टापिक मानते हैं क्योंकि ये कानून कहता है, और अन्य रिश्तों को इसलिए सिरियस नहीं मानते क्योंकि कानून ऐसा कहता है?, लेकिन हमें अपने अन्दर से क्या महत्वपूर्ण लगता है, कानून समाज और लोगों की सोच के साथ ही बदलता है।

क्या हम स्वयं को परखते हैं?

क्या हम आज भी लव मैरिज या इंटरकास्ट मैरिज को स्वीकार करते हैं?

नहीं!

यदि लव मैरिज या इंटरकास्ट मैरिज को स्वीकार करते तो इस तरह कोर्ट मैरिज में लगातार इजाफा ना हुआ होता।

लव मैरिज+अरेंज मैरिज, अर्थात मां-बाप सहमत हैं।

लव-मैरिज+कोर्ट मैरिज, अर्थात मां-बाप सहमत नहीं।

कोर्ट मैरिज करने वालों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है।

कारण

इंटरकास्ट मैरिज जिसमें माता-पिता की असहमति, या कभी पैसे की दीवार, तो कभी विचारों में मतभेद, जिसकी वजह से दो प्रेमी कोर्ट मैरिज करने को मजबूर हो जाते हैं।

प्यार जात-पात या ओहदा नहीं देखता, प्यार तो केवल प्यार को पहचानता है। लेकिन ज्यादातर माता-पिता समाज की इन खोखली बातों से डर कर बच्चों का साथ नहीं देते तब मजबूरन बच्चों को ये रास्ता चुनना पड़ता है।

ग्रामीण विकास के लिए महात्मा गाँधी के मार्ग पर चलने की आवश्यकता

आज वर्तमान समय में भारत 21 वी सदी के युग में विकास के मार्ग पर अग्रसर है। आज जिस तरह से भारत निरंतर विकास करता हुआ आगे बढ़ रहा है इससे भविष्य में यह उम्मीद की जा सकती है कि भारत विशव स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना लेगा। आज भारत को अगर विशव स्तर पर आगे लेकर जाना है तो ग्रामीण विकास की तरफ ध्यान देना होगा। क्योंकि महात्मा गाँधी का यह सिद्धांत था कि गाँव के अंदर वे सभी सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए जो कि शहर में है। उनका मानना था कि गाँव की स्थिति बिल्कुल शहर की तरह होनी चाहिए। तभी भारत विशव स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना पाएगा। आज भारत की 70त्न आबादी गाँव में निवास करती है परन्तु आज भी ग्रामीण क्षेत्रों का विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाया है। आज भी भारत के कई ग्रामीण इलाको में मूलभूत सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं है। अंतराष्ट्रीय उर्जा एजेंसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक अभी तक भारत के 82त्न ग्रामीण इलाकों के अंदर बिजली की सुविधा उपलब्ध हो पायी है। इसका अर्थ बिल्कुल साफ है कि आज 18% जनता जो कि ग्रामीण इलाकों में रह रही है वह सभी अपना जीवन बिना बिजली के व्यतीत कर रहे है। इसलिए आज सरकार को ग्रामीण विकास की तरफ ध्यान देना होगा। क्योंकि आज भारत के ग्रामीण इलाको में काफी

समस्याएँ हैं जैसे कि नागरिकों को साफ पीने योग्य पानी न मिल पाना, गाँव में 24 घंटे बिजली की व्यवस्था का न होना, ग्रामीण इलाकों में अच्छे शिक्षण संस्थानों का अभाव आदि बहुत सारी समस्याओं का सामना आज गाँव के नागरिको को करना पड़ रहा है। इसलिए आज सरकार को गाँव के विकास के लिए नई-नई योजनाएँ बनानी होगी और इसके साथ ही उन योजनाओं का सही तरह से क्रियान्वन हो पाए इसके लिए सरकार को एक विशेष टीम का गठन करना होगा। जो समय समय पर निरीक्षण करने के बाद सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करे। तभी सरकार के द्वारा विकास कार्यो के लिए भेजी गयी धनराशि से ग्रामीण इलाकों का पूर्ण रूप से विकास हो पाएगा। आज भारत के अंदर भ्रष्टाचार की समस्या काफी ज्यादा बनी हुई है। जिस कारण से सरकार के द्वारा विकास कार्यो के लिए भेजी गयी धनराशि सही स्थान पर नहीं लग पाती है व कुछ मुख्य व्यक्तियों के द्वारा उस विकास कार्य की धनराशि में भ्रष्टाचार किया कर लिया जाता है। जिस कारण से ग्रामीण विकास नहीं हो पाता है। आज हम सभी नागरिकों को इस ग्रामीण स्तर पर बढ़ रहे भ्रष्टाचार के बारे में सरकार को जागरूक करना होगा। ताकि भविष्य में गाँव का विकास सही तरह से हो सके। इसलिए आज वर्तमान समय में भारत को विश्व स्तर पर आगे लेकर जाने के लिए पूर्ण रूप से ग्रामीण विकास करना होगा। क्योंकि महात्मा गाँधी ने भी कहा था कि भारत की आत्मा गाँव में निवास करती है। इसलिए भारत को विकास के मार्ग की तरफ आगे ले जाने के लिए हमें उसकी आत्मा जो कि गाँव है उसके विकास पर बल देना होगा। तभी भारत पूर्ण रूप से समृद्ध व शक्तिशाली राष्ट्र बन पाएगा। आज सरकार को ग्रामीण इलाकों के विकास की तरफ ध्यान देना होगा। तभी भविष्य में ग्रामीण इलाके के नागरिक बड़े अच्छे ढंग से अपना जीवन यापन कर पाएंगे । आज वर्तमान समय में महात्मा गाँधी के द्वारा ग्रामीण इलाकों के विकास पर दिए बल की पूर्ण रूप से प्रासंगिकता बनी हुई। आज सरकार व ग्रामीण स्तर पर विकास करने वाले मुखिया लोगों को महात्मा गाँधी को अपना आदर्श मानते हुए विकास करना होगा। तभी गाँव का अच्छे ढंग से विकास हो पाएगा व ग्रामीण इलाकों में रह रहे नागरिकों का जीवन स्तर ऊँचा हो पाएगा और इससे भारत की विश्व स्तर पर एक विशेष पहचान बन पाएगी। जो कि भारत के सभी नागरिको के लिए बड़े गर्व की बात होगी।

सरताज सिंह, पंजाब यूनिवर्सिटी,चंडीगढ़

'गांधी जी हमारे आदर्श'

जनमानस ही वह शक्ति है जो संगठित होकर या आक्रोशित होकर अपनी बातें मनवा लेती है, दंड, पुरुस्कार की क्षमता रखने वाली कोई भी राजसत्ता या सरकार कितनों का सुधार कर पाती है?

वह अपराध और अनीति पर अंकुश तो लगा सकती है लेकिन अंतःकरण को भिगो नहीं पाती।

मौका मिलते ही लोग फिर उन्हीं दुष्कर्मों पर संलग्न हो जाते हैं , जिन्हें रोका जाता है,

किंतु परिवर्तन या आंतरिक रुपांतरण की प्रेरणा तो हमेशा महापुरुषों से ही मिलती है।

बचपन से हम सभी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सुना समझा और जाना, और उनके बताए हुए मार्ग पर चलने का प्रयास किया।

'दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल'

संत स्वरूप महात्मा गांधी जी हमेशा हमारे प्रेरक रहे गांधीजी की जो मूलभूत विचारधाराएं हैं वह हमेशा हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेंगी,

'स्वच्छता, स्वास्थ ,स्वदेशी स्वावलंबन, और सदाचार'

यह वे नीतियां हैं जो हमें हमेशा संस्कारवान, नीति वान, एवं सदाचारी बनने के लिए प्रेरित करती रहीं है।

विचारधारा का समावेश मानस पटल पर अपनी छाप छोड़ता है गांधी जी ने देश की आजादी से लेकर मनुष्य की जीजिविषा और सुखमय परिवार के सूत्र समायोजन पर देश को अपने बहुमूल्य उपदेशों के जरिए जीवन जीने की कला का मार्ग प्रशस्त किया, उनकी विचारधारा ने हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता पर एक अमिट छोड़ी आज भी हम समस्त देशवासियों उनके बताए हुए उपदेशों और संदेशों को आत्मसात कर उनके बताए हुए मार्गो पर चलने का प्रयास करते हैं। पिछले दिनों वैश्विक महामारी से पूरा विश्व प्रभावित हुआ ऐसे में गांधीजी की विचारधारा को आत्मसात करना कितना सार्थक रहा यह अवलोकन किया जाए तो पाया कि उनके सिद्धांतों एवं विचारों ने हमें सुरक्षित एवं स्वस्थ रखा।

स्वाध्याय, शांति, प्राकृतिक चिकित्सा, स्वरोजगार जैसी मौलिक भावनाओं का सदुपयोग कितना सार्थक रहा यह हम सभी ने जाना,

अकेलापन एवं एकांत, सामाजिक दूरियों से कैसे निजात पाई जाए यह एक पूर्ण कालिक प्रश्न रहा।

गांधीजी के विचारों को हमने एकांत में अपने आप को अवलोकन करने का शुभ अवसर प्रदान किया एवं समस्याओं के निराकरण में एक रामबाण औषधि की तरह समायोजन कर उपयोग किया ।

'स्वाध्याय' एकांत को अपने विचार मंथन तक ही सीमित न रखें, इस काल का उपयोग अच्छी पुस्तकों के अध्ययन में व्यतीत करें, समसामयिक से अपने विचारों को जोड़ें पुस्तकों को एक अच्छे मित्र की भांति व्यवहार में लाएं

अकेलापन दूर करने के लिए स्वाध्याय एक अनुकरणीय माध्यम है।

'शांति'यूं तो मन की गति को रोक पाना असंभव है परंतु उसे ऐसे विचारों में व्यस्त किया जाए और वह केवल सकारात्मकता पर अडिग रहे तो मन की शांति उत्तरोत्तर बढ़ जाती है,

'प्राकृतिक चिकित्सा' हमने प्राकृतिक चिकित्सा जड़ी बूटियों के द्वारा इन दिनों अपने शरीर एवम् स्वास्थ्य को सुरक्षित रखा है सही मायने में यह सबसे महत्वपूर्ण विषय रहा ।

पिछले दिनों लाक डाउन जैसे प्रतिबंध से आए दिन लोगों के रोजगार प्रभावित हुए ऐसे में स्वरोजगार जैसे विकल्पों के माध्यम से काफी हद तक जीविकोपार्जन में अपनी भूमिका निभाई।

देश की आर्थिकी पर भी इन दिनों बहुत असर पड़ाः GDP काफी नीचे आ गई सरकार ने अपने तरीके से इस समस्या के निवारण में प्रयास किया,

हम देशवासियों ने भी काफी हद तक स्वदेशी चीजों को अपनाकर निकट भविष्य में निराकरण की ओर एक सार्थक पहल की,

स्वच्छता बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू रहा है इसका समायोजन तन, मन और अपने आसपास के वातावरण को दूषित होने से बचाता है।

'सदाचार' याने धर्म, संस्कृति, संवेदना, आचार विचार यह वह आचरण है जो सांस्कृतिक संवेदना के संचार का उत्कृष्ट माध्यम है, जो हमें एक दूसरे का सम्मान करना सिखाता है

अंततः गांधीजी की विचारधारा सार्वभौमिक है जो हमें हमेशा प्रेरित करती है, और करते रहेंगी। गांधी जी अहिंसा परमो धर्मः के पथ-प्रदर्शक एवं अंगीकार थे, आधुनिक काल में महात्मा गांधी को अहिंसा के महान पुजारी/उपदेष्टा के रूप में देखा जाता है, संयुक्त राष्ट्र संघ ने उनके सम्मान में 2अक्टूबर को अहिंसा दिवस घोषित कर दिया है।

सरस्वती धाणेश्वर
निदेशक, विश्व शांति समिति भारत भिलाई छत्तीसगढ़

महात्मा गाँधी और शौच

गॉंधीजी के ज़िक्र के साथ स्वतंत्रता संग्राम तथा सत्य, अहिंसा जैसे प्रत्ययों का जुड़ना तो लाज़मी ही है , मगर शौच के बारे में बात कम ही की जाती है। हालाँकि हम ये अवश्य जानते हैं कि वो अपना मैला खुद साफ़ करने के हिमायती थे और करते भी थे।

मनुष्य के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को क़ायम रखने के लिए की जाने वाली यौगिक क्रिया को 'शौच' कहा जाता है । शौचक्रिया के लिए समुचित प्रबंध ना होने के कारण अक्सर लोग न केवल अपने ही शरीर से घृणा करने लगते हैं बल्कि औरों को स्पर्श करने से भी कतराते हैं। जैसा कि प्रस्तुत उक्ति में कहा भी गया है 'शौचातस्यांग जुगुप्स्या परैरसंसर्ग'। गॉंधीजी का वक्त वो वक़्त था जब आम भारतीय अपने अस्तित्व की खोज में लगा था ; अंग्रेज़ी दासता से मुक्ति की प्रतीक्षा में था । ग़ुलामी, घोर ग़रीबी और पिछड़ेपन से जूझता हिंदुस्तानी ना तो स्वच्छता के सही मायने समझता था और ना ही उसके लिये आरोग्यशास्त्र के ज़रिये जागरूकता पैदा करने की ज़रूरत महसूस की गई थी । ऐसे में ग्रामीण तथा कस्बाई भारत खुले में शौच करने को ही इतिश्री मान लेता था । परिणामस्वरूप अनगिनत बीमारियों के कारण असमय ही काल का ग्रास बन जाता था । जनता को इस दिशा में जागरूक करने के उद्देश्य से ही अपने द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक समाचार पत्र 'नवजीवन ' में गॉंधी जी ने लिखा था कि ' लैवेटरीज़ ड्राइंगरूम से भी ज़्यादा साफ होनी चाहियें ।' उन्होंने यह भी कहा कि, 'सेवादारों के निवास स्थान भी उतने ही स्वच्छ होने चाहिए जितने मिनिस्टरों के बंगले होते हैं।'

मगर अफ़सोस कि आज भी हमारे देश की क़रीब छः सौ लाख जनता के पास साझा या व्यक्तिगत टॉयलट या तो उपलब्ध ही नहीं है ; या जो भी उपलब्ध हैं, उनमें से काफ़ी तादाद में तो बहते पानी की सुविधा या अच्छे रखरखाव के अभाव में नॉन-फ़ंक्शनल पड़े रह गये हैं। यह सोचते हुए भी शर्म आती है कि विश्व का चौंसठ प्रतिशत ओपन-डेफ़ेकेशन भारत में होता है।

यही कारण है कि मैं जयराम रमेश जी की इस बात से इत्तफ़ाक़ रखती हूँ कि, 'टॉयलेट्स आर मोर होली दैन टेंपल्स!' (शौचालय मंदिरों से ज़्यादा पवित्र हैं।)

डॉ. कविता माथुर

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

05

जयपुर, गुरुवार, 07 अक्टूबर, 2021

गाांधीजी के विचार-सिद्धांत सर्वकालिक हैं...

ज्ञानवती सक्सैना 'ज्ञान'

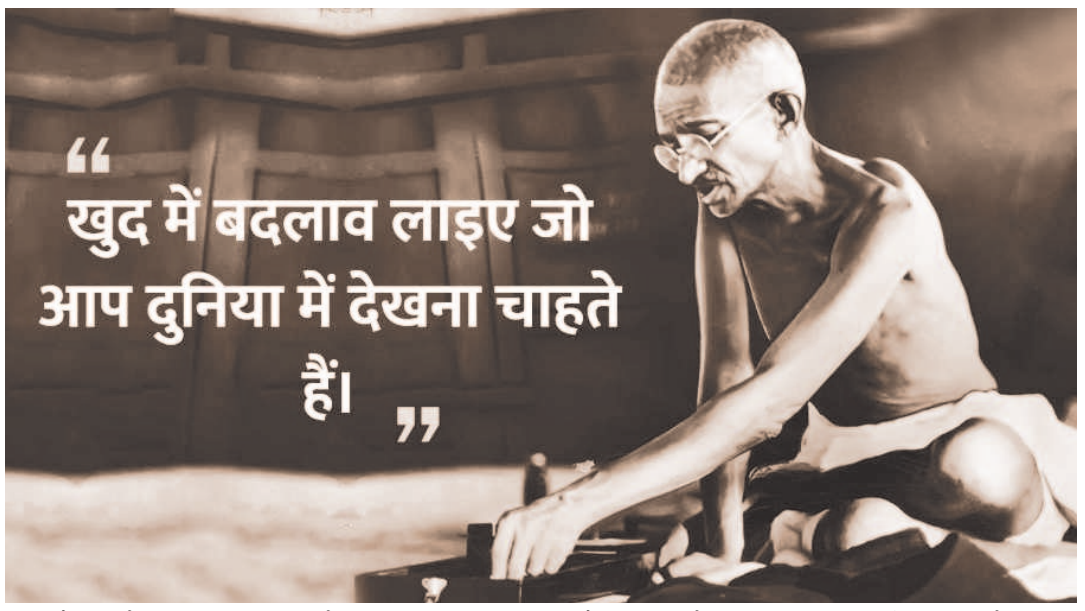

आज विश्व शक्तियाँ शस्त्र एकत्र करने की स्पर्धा में लगी हुई है लेकिन एक छोटे से वायरस को हरा पाने में असमर्थ और लाचार साबित हो रही है।आज संपूर्ण विश्व बाज़ारवाद के दौड़ में शामिल हो चुका है। लालच की परिणति युद्ध की सीमा तक चली जाती है। इस हेतु वैश्विक रूप से शस्त्रों की होड़ लग गई है। यह अंधी दौड़ दुनिया को अंततः विनाश की ओर ले जाती है।

ऐसे में विश्व शांति की पुनर्स्थापना के लिए , मानवीय मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये आज गांधी जी नए स्वरूप में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठे हैं।

गांधीजी ने आजादी की लड़ाई के साथ-साथ छुआछूत उन्मूलन, हिन्दू-मुस्लिम एकता, चरखा और खादी को बढ़ावा, ग्राम स्वराज का प्रसार, प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा और परंपरागत चिकित्सीय ज्ञान के उपयोग सहित तमाम दूसरे उद्देश्यों पर कार्य करना निरंतर जारी रखा।

गाँधी जी साधन व साध्य दोनों की शुद्धता पर बल देते थे। उनके अनुसार साधन व साध्य के मध्य बीज व पेड़ के जैसा संबंध है एवं दूषित बीज होने की दशा में स्वस्थ पेड़ की उम्मीद करना अकल्पनीय है।

1. **सत्य:** गांधीजी सत्य के बड़े आग्रही थे। वे सत्य को ईश्वर मानते थे। सत्य उनके लिये सर्वोपरि सिद्धांत था। वे वचन और चिंतन में सत्य की स्थापना का प्रयत्न करते थे।
2. **अहिंसा:** गांधीजी के अनुसार मन, वचन और शरीर से किसी को भी दुःख न पहुँचाना ही अहिंसा है। गांधीजी के विचारों का मूल लक्ष्य सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से विरोधियों का हृदय परिवर्तन करना है।स्थाई विश्व शांति के लिए आज गांधीजी के अहिंसा के सिद्धांत की,उनके जीवन दर्शन की परम आवश्यकता है।
3. **स्वराज्य:** गांधीजी का मानना था कि इससे स्वतंत्रता (स्वराज) को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि भारत का ब्रिटिश नियंत्रण उनके स्वदेशी उद्योगों के नियंत्रण में निहित था। स्वदेशी अभियान भारत की स्वतंत्रता की कुंजी थी और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों में चरखे द्वारा इसका प्रतिनिधित्व किया गया था।
4. **सत्याग्रह:** गांधीजी का मत था कि निष्क्रिय प्रतिरोध कठोर-से-कठोर हृदय को भी पिघला सकता है। आत्मबल शारीरिक बल से अधिक श्रेष्ठ होता है। बुराई के प्रतिकार के लिये यदि आत्मबल का सहारा लिया जाए तो मौजूदा परेशानियाँ दूर की जा सकती हैं।
5. **सर्वोदय:** आज के दौर में पूरा विश्व एक ऐसे ही समाज की खोज में है जहाँ शोषण , वर्ग, जाति आदि की कोई जगह न हो। कहीं रोहिंग्या तो कहीं शिया और सुन्नी के नाम पर हिंसा हो रही है तो कहीं आतंक फैलाया जा रहा है। एक वर्ग दूसरे का शोषण कर रहा है जिससे समाज में अव्यवस्था फैल रही है। सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषण-मुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास का साधन और अवसर मिले।
6. **ट्रस्टीशिप:** वंतमान समय में गांधीजी की यह विचारधारा काफी प्रासंगिक है जब विश्व में गरीबी और भूखमरी चारों तरफ अपना साया फैलाये खड़ी है। गांधीजी का यह विचार कि धन व उत्पादन के साधनों पर सामूहिक नियंत्रण की स्थापना हेतु न्यास जैसी व्यवस्था स्थापित की जाए, काफी मायने रखती है।

आजादी के इतने दशकों बाद भी देश के सामने लगभग वही समस्याएं हैं और उनके समाधान भी कमोबेश वही हैं, जिनकी बात गांधीजी किया करते थे। जिस 'आत्मनिर्भर भारत का विचार, कोरोनाकाल में प्रधानमंत्री ने रखा, उस आत्मनिर्भरता और स्वदेशी की अवधारणा' ग्राम स्वराज के द्वारा गांधीजी ने दशकों पूर्व ही रख दी थी। बापू द्वारा परिकल्पित 'ग्राम स्वराज मनुष्य केंद्रित एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें सत्ता और अर्थ दोनों का विकेंद्रीकरण होता है। दलितों के उत्थान की बात गांधीजी अपनी पत्रिका 'हरिजन में नियमित रूप से करते थे।' स्वच्छ भारत का सपना गांधीजी ने ही संजोया था।

चारों ओर हिंसा का बोलबाला है और इंसान एक दूसरे का दुश्मन बना बैठा है। ऐसे समय में महात्मा गांधी के अहिंसावादी दर्शन से समाज तथा देश का उद्धार हो।

पर्यावरण से लेकर अर्थशास्त्र तक सभी क्षेत्रों में गांधीजी के विचार हर कसौटी पर खरे हैं और जीवन और समाज को सही राह पर दिखाने वाले हैं ।

गाांधीजी के विचार-सिद्धांत सर्वकालिक हैं, वे हर दौर मे प्रभावशाली रहेंगे।

कविता

आजादी और 'बापू'

सदियों तक यह देश हमारा,
अंधकार में रहा विलीन।
बंधी दासता की बेड़ी में,
भारत माता' रही मलीन।

अंग्रेजी सत्ता ने आकर,
भारत पर अधिकार किया।
नेक और भोली जनता से,
मनमाना व्यवहार किया।।

एक सितारा चमक उठा,
लोगों का भाग्य जगाने को।
सबकी अभिलाषा मुखर हुई,
भारत का तिमिर हटाने को।।

यह शुभ सितारा दुनिया का,
'बापू' भारत का प्यारा था।
सत्य अहिंसा, विनयशीलता,
जिसका प्रबल सहारा था।।
कोई झगड़ा किये बिना ही,
भारत को आजाद कराया।
अपने सत्याग्रह के बल से,
अंग्रेजों को दूर भगाया।।

श्रद्धा से अर्पित करता हूँ,
भाव-भक्ति के पुष्प ललाम।।
इस पुनीत प्रवसर पर बापू',
करता हूँ मैं तुम्हें प्रणाम।।

कृष्ण कुमार पारीक, जयपुर

स्वच्छता अभियान

आओ बहिनों आओ भाई
आओ जमकर करें सफाई
सभी में जोश उल्लास जगाओ
सफाई अभियान से जुड़ जाओ

गली चौबारे साफ रखो तुम
हर कोने पर नज़र रखो तुम
कुड़ेदान न भारत को बनाओ
सफाई अभियान से जुड़ जाओ

ग़न्दगी को पास न रखना
ग़न्दगी से तुम सदा ही बचना
शौचालय का इस्तेमाल कराओ
सफाई अभियान से जुड़ जाओ

संतों तक ने खुद की है सफाई
शरम की काहे बात की है भाई
अच्छे स्वास्थ्य को तुम अपनाओ
सफाई अभियान से जुड़ जाओ
ग़न्दगी तो है बड़ा कहर जी
प्राण भी ले लेता ये ज़हर जी
अस्वच्छता को दूर भगाओ
सफाई अभियान से जुड़ जाओ

मौलिक ये अधिकार हमारा
देता जो हमें संविधान हमारा
सबको अब ये बात बताओ
सफाई अभियान से जुड़ जाओ

होती जहाँ स्वच्छता सफाई
देवता वहीं हैं बसते भाई
स्वच्छता की अब अलख़ जगाओ
सफाई अभियान से जुड़ जाओ

स्वच्छ हो भारत स्वस्थ हो भारत
गर्व से ये नारा अपनाओ
देश को अब तुम स्वस्थ्य बनाओ
सफाई अभियान से जुड़ जाओ

डॉ लता सुरेश

गाँधी का कैनवास

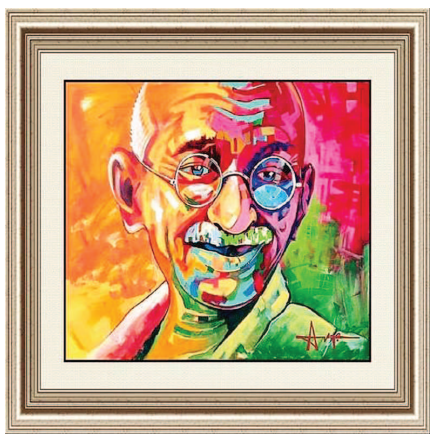

सपने मन से उठते हैं, आसमान में बोए जाते हैं और परिश्रम से सींचे जाते हैं। सबसे बढ़कर सपनों की कोई सीमा नहीं होती ,कोई दायरा नहीं होता और यकीन से भरी हुई यह आत्मा आशाओं की वह अपेक्षाएँ हैं जो सदानीरा नदियों सी होती हैं।

मुझे कई बार लगता है कि सपने भी व्यक्तित्व के आकलन का सबसे प्रभावी माध्यम होते हैं। जब खुद को ही देखें तो मध्यम और यदि वसुधा में बसा पूरा कुटुम्ब दिखायी दे तो विराट व्यक्तित्व हैं आप। मोहन के सपने भी कभी व्यक्तिगत नहीं रहे। उन्होंने सपने देखे पूरे समाज के लिए, पूरे राष्ट्र के लिए और पूरे विश्व के लिए। उनके सपनों की सहजता ही उनकी विराटता का प्रदर्शन है, लेकिन इस विराटता में कहीं भी भयभीत करने वाली भव्यता नहीं है, बल्कि एक सरल सहजता है। जो यह सिद्ध करती है कि गाँधी हम सब में हैं। प्रश्न सिर्फ उन्हें पहचानने का और अपनी इस सहज प्रवृति पर कार्यवाही करने का है।

वास्तव में गाँधी के सपनों का भारत बनाने के लिए हमें सोने की नहीं बल्कि जागने की ज़रूरत है, साथ ही ज़रूरत है इस ग़लतफ़हमी से मुक्ति पाने की कि सपने सोने पर ही आते हैं। हमें गाँधी को पढ़ने से ज्यादा गुनने की और उससे भी ज्यादा उनकी प्रक्रियाओं और रणनीतियों में समयानुकूल बदलाव करने की आवश्यकता है। यहाँ मैं पाठकों को बताना चाहूँगा कि स्वतंत्रता से पूर्व एक पत्रकार के पूछे जाने पर कि गांधीवाद क्या है, राष्ट्रपिता ने बड़ा झल्लाते हुए कहा था कि 'गांधीवाद जैसी कोई चीज नहीं है और ना ही मैं ऐसा कुछ छोड़ कर जाना चाहता हूँ। सत्य व अहिंसा अनादि काल से मानव के चिंतन व प्रक्रिया का हिस्सा रहे हैं तथा आगे भी रहेंगे'।

हमारी वैचारिक समस्या यह है कि हमने गाँधी को मात्र श्रद्धा का पात्र बना दिया है, और यह हमारी वास्तविक समस्या है कि हम गाँधी को मानते तो हैं लेकिन उन पर प्रयोग करने से डरते हैं जबकि वह स्वयं अपने जीवन में तथा जीवन के बाद ऐसा नहीं चाहते थे।

दुर्भाग्यपूर्ण है कि मात्र दो दिवस, सरकारी कार्यालयों एवं विद्यालयों में उनकी तस्वीरें, कभी-कभी कुछ औपचारिक प्रतिस्पर्धाओं में उनका नाम, कुछ सड़कें, कुछ इमारतें , कुछ पुरस्कार और हमने इतिश्री मान ली अपने कर्तव्यों की। मेरे विचार में गांधी के सपने पूर्ण करने का सबसे प्रबल माध्यम हो सकता है उन्हें इन औपचारिकताओं से मुक्त करना। इस तकनीकी दक्ष विश्व में गाँधी को जितना अनौपचारिक किया जाएगा वह उतने ही प्रभावशाली बनकर उभरेंगे। एक उदाहरण आपके सामने रखता हूँ कि तमाम औपचारिक अध्ययन सामग्री गाँधी की तरफ इतना ध्यान नही खींच पाई जितना की दो व्यवसायिक फिल्में।

भारत के विशाल युवा वर्ग के लिए गांधी को औपचारिक बंधनों में बांधकर उनके सामने रखना उन्हें कितना आकर्षित कर पाएगा इस पर मुझे संदेह है। जरूरत इस बात की है कि हम खुली हवा में श्वास लेना और ऑक्सीजन सिलेंडर से श्वास लेने में अंतर करना सीखें और महात्मा को औपचारिक भयभीत करने वाली भव्यता से मुक्त कर उनको स्वभाविक सहजता के साथ प्रस्तुत करें। वर्तमान भारत को सहजता से अनुभव करने दें कि राजनीति मात्र शक्ति प्राप्ति का माध्यम नहीं बल्कि सेवा का प्रतीक है।

यदि किसी खेल में आप जीते नहीं तो इसका आशय यह नहीं कि आप अपने प्रतिपक्षी का अपमान करें बल्कि आप यह अनुभव करें कि कहीं कुछ कमी थी और कहीं कोई आप से बेहतर था। स्वयं की त्रुटियों का आकलन और उससे भी बढ़कर उन्हें ठीक करने के इमानदार व्यक्तिगत प्रयास उनके सपनों को साकार करने का बेहतरीन माध्यम हो सकते हैं। हम स्वयं इस तथ्य को अनुभव करें कि अपनी 79 वर्षीय आयु में अनेकों बार नोबेल पुरस्कार के लिए मनोनीत होने वाला, बगैर किसी पद के भारत के जनमानस के हृदय पर सहज शासन करने वाला यह व्यक्तित्व 79 वर्ष की आयु में एक बालक द्वारा उनके हिंदी हस्तलेख की आलोचना करने पर रोज एक पृष्ठ सुलेख लिखा करता था। आलोचना को सहजता से स्वीकार करना और उसे ठीक करने का प्रयास करना अनौपचारिक माध्यम से अधिक बेहतर तरीके से संभव हो सकता है इसका उदाहरण गाँधी जी का स्वयं का जीवन है। अनेक मामलों पर अपने समकालीन अनेक व्यक्तित्वो से मतभेद के बावजूद उन्होंने कभी संवाद बंद नहीं किया।

यदि मैं कहूँ कि भारत की लोकतांत्रिकता गाँधी के व्यक्तित्व में अपने सौंदर्य के चरम पर दिखाई देती है, तो गलत नहीं होगा। भारत में उनका ग्राम स्वराज का सपना और संकल्प, बीसवीं शताब्दी के बिखरे हुए तथा शोषित क्षेत्र नहीं बल्कि आत्मनिर्भरता और आधुनिकता के प्रतीक हो सकते हैं, जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति ईमानदारी तथा नैतिकता के दायरे में रहते हुए कर सकते हैं , जहाँ जातीय व प्रजातीय पूर्वाग्रह प्रभावी नहीं हैं, मात्र राष्ट्रवाद अपने उदार स्वरूप में विद्यमान है। प्रसिद्ध गाँधीवादी चिंतक रोनाल्ड टर्चेक लिखते हैं कि 'वह अपने विकल्प आधुनिक दुनिया से भागते निष्क्रिय शरणार्थियों की तरह नहीं बल्कि उसके सर्वाधिक आत्मविश्वासी प्रकरण को सक्रियता से चुनौती देते हुए प्रस्तुत करते थे। वह समाधान नहीं देते बल्कि किसी भी उत्तर में छुपे विरोधाभास और विडंबना को उजागर करते।' इस कथन में गाँधीवाद के सभी आयाम अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत हो जाते हैं, जिसमें वे स्वयं को एक राह के रूप में प्रस्तुत करते हैं ना कि मंजिल के रूप में। उन्होंने अपने जीवन में इसे भली-भांति समझ लिया था कि मंजिल का एक आशय अंत भी होता है तथा सत्य व अहिंसा चिरायु हैं ,अमर्त्य हैं। उनके सपनों को यथार्थ में बदलने का यह सबसे प्रबल माध्यम हो सकता है कि हम उनके चिंतन के मूल तत्व सत्य व अहिंसा पर दृढ़ स्थिर रहते हुए प्रयोग करने से नहीं चूकें क्योंकि महात्मा ने संपूर्ण जीवन स्वयं भी यही किया था।

डॉ. मनोज अवस्थी
सोसिएट प्रोफेसर,
अजमेर

अबूझ...

'बाप रे! घर है या भूत बंगला?', मकड़ी के जालों और धूल-धक्कड़ से भरे बंगले का निरीक्षण कर राधा ने कहा, 'मैं यहाँ नहीं रह सकती। तुम प्रॉपर्टी के दलाल को मना कर दो।'

'इतनी लंबी-चौड़ी प्रॉपर्टी कौड़ियों के भाव मिल रही है। इसके मालिक उम्र अधिक हो जाने से इकलौते बेटे के पास विदेश चले गए हैं। जिस रिश्तेदार ने मदद की थी, उसकी कमजोर माली हालत के कारण प्रॉपर्टी उसके हवाले करके।कोई लौट कर नहीं आने वाला, घूमघामकर कर देख लो, फैसला फुर्सत से करना।'

'पड़ोसियों से पूछा, इतनी बड़ी प्रॉपर्टी सस्ते दामों में क्यों बिक रही है?'

'दूर-दूर तक कोई मकान भी नहीं है,किससे पूछें?'

'हमारे ड्राइवर ने राहगीरों से पूछा था; उसे अविश्वसनीय सी कहानियाँ सुननी पड़ीं कि यहाँ रूहों का साया है। अंधेरा होने पर कोई इधर नही आता,तब बंगले की छत और बालकनी में साये दिखते हैं।'

'हो सकता है, वे सही हों।'

'विज्ञान शिक्षिका होकर ऐसा कहती हो! अभी बंगला भली-भाँति देख लो, तत्पश्चात इस क्षेत्र में घूम-घामकर मालूमात कर फैसला करना!'

'पुरुष बस मनमर्जी चलाना जानते हैं। अब देखो, बहस में अंकुर जाने कहाँ निकल गया? दिख नहीं रहा है। चलो ढूँढते हैं,यहीं कहीं होगा!'

'ड्राइवर! अंकुर को देखा?'

'बाबा को एक गेंद मिल गई है।पीछे बने गैरेज के पास खेल रहे हैं।'

'हम उधर ही चलें?'

'गेंद कहाँ से मिली अंकुर?'

'यहीं पड़ी थी, पापा।'

'आ ही गए हैं, तो गैरेज भी देख लें।पर गुच्छे में इसकी चाभी ही नहीं है।'

'यह ताला पानी और जंग से सड़ चुका है, चाभी क्या करेगी?' ड्राइवर ने ठोंक ठाँक कर ताला हटा दिया।

'रहना हुआ तो नया ताला लगेगा', कहा।

शटर उठाते ही एक खस्ताहाल विदेशी कार नजर आई। कार का शीशा साफ करते ही सौ नंबर डायल करने की जरूरत आन पड़ी।

पुलिस ने आकर कार में से दो नर-कंकाल निकाले। पुलिस जाँच करेगी ही , पर कहानी इनके समझ में आ चुकी थी, घर के मालिकों के विदेश गमन की भी और टहलते सायों की भी; जो अपनी संपत्ति अपने हत्यारे के हाथों बिकने देना नहीं चाहते थे।

नीना सिन्हा

नट्टू काका उर्फ घनश्याम नायक कैंसर से हार बैठे जिंदगी

परमेन्द्र श्रीवास्तव

घनश्याम नायक उर्फ नट्टू काका का जन्म 12 मई 1944 को गुजरात के उंधाई में हुआ और 3 अक्टूबर 2021 को इनका देहान्त हो गया है।

13 सालों से लगातार टीवी शो तारक मेहता का उल्टा चश्मा में दर्शकों का मनोरंजन करने वाले अभिनेता ने 77 साल की उम्र में अंतिम साँस ली । नट्टू काका अर्थात घनश्याम नायक ने लगातार दर्शकों का मनोरंजन किया। नट्टू काका पिछले काफी समय से बीमार चल रहे थे। इस बात की जानकारी खुद तारक मेहता का उल्टा चश्मा के निर्माता असित मोदी ने साझा की थी। उन्होंने बताया कि नट्टू काका एक लम्बे समय से कैंसर की बीमारी से जूझ रहे थे। कुछ महीने पहले उनके दो ऑपरेशन भी हो चुके थे। बीमारी के कारण वह रोजाना शूटिंग पर नहीं जा पाते थे लेकिन वह शुरुआत से लेकर अभी तक तारक मेहता की टीम का हिस्सा थे।

नायक ने हमेशा अपनी कॉमेडी और अलग अंदाज से लोगों का खूब मनोरंजन किया। तारक मेहता का उल्टा चश्मा में उन्होंने जेठालाल के असिस्टेंट नट्टू काका की भूमिका निभाई थी। वो उनकी दुकान में काम करते थे और बाघा उनका भांजा था। नट्टू काका के अंग्रेजी बोलने का अंदाज प्रशंसकों को खूब पसंद आता था। वे अपने फनी एक्सप्रेशन्स से सभी को हंसा-हंसा कर लोटपोट कर देते थे।

हिलव्यू समाचार परिवार श्री घनश्याम नायक नट्टू काका को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

जून में एक मीडिया चैनल से खास बातचीत करते हुए नट्टू काका उर्फ घनश्याम नायक के बेटे विकास ने बताया था कि पांच महीने पहले घनश्याम नायक के गले में कुछ स्पॉटस दिखाई दिए थे। इसके बाद उन्होंने आगे का इलाज शुरू कराने का फैसला किया। विकास ने बताया कि अप्रैल महीने में गले की पॉजिट्रॉन एमिशन टोमोग्राफी स्कैनिंग कराई गई थी, जिसके बाद हमें इस बीमारी का पता चला। उन्हें इन स्पॉट्स की वजह से कोई तकलीफ नहीं थी।

गंभीर बीमारी की चपेट में आने के बाद नट्टू काका यानी घनश्याम नायक का परिवार कोई रिस्क नहीं लेना चाहता था। इसलिए परिवार ने तुरंत उनके कीमोथेरेपी सेशन्स शुरू किए थे जिन्होंने शुरुआती दौर में उन्हें डाइगनॉस किया था, उस डॉक्टर से भी उन्होंने बातचीत की। इससे पहले भी घनश्याम नायक गले में परेशानी के चलते अपना ऑपरेशन करा चुके हैं। पिछले साल एक्टर के गले का ऑपरेशन हुआ था, जिसमें 8 गांठें निकाली थीं। ऑपरेशन के बाद डॉक्टर ने उन्हें आराम करने की सलाह दी थी। लेकिन 77 साल की उम्र में नट्टू काका काफी स्ट्रॉग थे। वह मुश्किल दौर में भी गुजरात के दमन में शो की शूटिंग कर रहे थे।

जीवन में इतनी परेशानियों के बाद भी नट्टू काका ज़िंदादिल इंसान थे। इस उम्र में भी वह काम के प्रति समर्पित थे और अपने फैंस का भरपूर मनोरंजन करते थे। वह सालों से लोगों का अपनी एक्टिंग से दिल जीत रहे थे। घनश्याम नायक को तारक मेहता का उल्टा चश्मा में नटवरलाल प्रभाशंकर उधईवाला यानि नट्टू काका की भूमिका निभाने के लिए ही प्रसिद्धि नहीं मिली बल्कि उन्होंने 100 से अधिक गुजराती और हिंदी फिल्मों के साथ लगभग 350 हिंदी टेलीविजन शोज में काम भी किया।

भावभीनी श्रद्धांजलि के साथ उन्हें नमन...

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

06

जयपुर, गुरुवार, 07 अक्टूबर, 2021

'आग़ाज़ ए अमन दोस्ती यात्रा 2021'

दुनिया का सबसे वीभत्स अपराध रहा है भारत का बँटवारा। यह दंश इतना गहरा है कि इसको भुला पाना नामुमकिन है। बीते 75 वर्षों में दोनों मुल्कों की अवाम ने इस विभाजन की बहुत बड़ी क़ीमत चुकाई है। हम इस विभाजन की पीढ़ा को तो कम नहीं कर सकते मगर दोनों मुल्क सब कुछ भुलाकर दोस्ती का हाथ बढ़ाकर इसकी वीभत्सा को कम ज़रूर कर सकते हैं । दोनों ही मुल्क में रहने वाली अवाम चैन अमन दोस्ती चाहती है। सरहद के उस पार जो हमारे बिछड़े परिवार का हिस्सा हैं वो एक बार अपने पूर्वजों की सरज़मीं पर सजदा करना चाहते हैं । जो इस मुल्क में हैं वो एक बार सरहद के उस पार जाकर अपने बिछड़े हुए परिवारों से मिलना चाहते हैं। जिस संस्कृति , कला और विरासत का बँटवारा कर दिया गया उसको एक बार एक साथ जोड़कर देखना चाहते हैं।

मगर गुज़रे हुए कुछ सालों में दोनों मुल्कों की राजनीति और सरकारों ने इस सरहद की खाई को और मज़बूत कर दिया हैं। इस समय जब सारा देश नफरत की आग में जल रहा है उस माहौल में अमन और दोस्ती का आग़ाज़ करते हुए ये यात्रा निकाली गई जिसका मक़सद दोस्ती और अमन

का पैग़ाम देकर दोनों मुल्कों कड़वाहट को दूर करना है ।

इस तीन दिवसीये यात्रा में मुझे भी शामिल होने का अवसर मिला। इस यात्रा में भारत के विभिन्न राज्यों से आए बुद्धिजीवी, लेखक, कवि तथा समाजसेवी शामिल थे। जो हिंदू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना होकर बेहतरीन इंसान थे । इंसानियत को ज़िंदा रखे हुए थे मशहूर शायर ख़्वाजा अल्ताफ़ हुसैन हाली पानीपती ने कहा था फरिश्तों से बेहतर है इंसान बनना मगर इसमें पड़ती है मेहनत ज़्यादा । जिनसे सम्पूर्ण यात्रा के दौरान बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला । इस यात्रा में शहीद भगत सिंह जी के भांजे प्रोफ़ेसर जगमोहन सिंह जी , श्री राम मोहन राय जी, संजय राय जी , रवि नितेश , दीपक कथूरिया परवीन तँवर और आग़ाज़ ए अमन के सभी साथी जो इंसानियत का परचम लेकर इस यात्रा को अहिंसा के पुजारी बापू की समाधि से शुरू होकर शहीदे आजम भगत सिंह , सुखदेव ,राजगुरु की समाधि हुसैनीवाला जो दोनों मुल्कों की सीमा पर स्थित है , इस उम्मीद के साथ यात्रा लेकर गए। एक दिन नफ़रतों का ख़ात्मा करके अमन और दोस्ती का आग़ाज़ होगा ।

जब यह यात्रा दिल्ली से प्रारम्भ होकर हरियाणा और पंजाब के विभिन्न पड़ावों से गुज़री तो यह एहसास हुआ देश का हर आम नागरिक दोनों मुल्कों में सिर्फ़ अमन चाहता है।हर जगह इस दोस्ती अमन की यात्रा की कामयाबी का आशीर्वाद,फूलों की वर्षा हुई , जय जगत का उदघोष हुआ। इंकलाब ज़िंदाबाद के नारे लगे । इस यात्रा में ना कोई जाति थी ना कोई धर्म सिर्फ़ हिंदुस्तान था ।

मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँ उनकी जिन्होंने इस यात्रा में शामिल होने का अवसर दिया और आज़ादी की 75वीं सालगिरह की ऐतिहासिक यात्रा का हिस्सा बनाया ।

जो अब्र यहाँ से उठेगा
वो सारे जहाँ में बरसेगा ,
ख़ुद अपने चमन पर बरसेगा
ग़ैरों के चमन पर बरसेगा।

सुम्मी इकबाल
बदायूं उ.प्र.

जय जगत

(वसुधैव कुटुंबकम" की भावना से ओतप्रोत गीत)

जय जगत पुकारे जा,
सिर अमन पर वारे जा,
सबके हित के वास्ते,
अपना सुख बिसारे जा!
प्रेम की पुकार हो,
सबका सबसे प्यार हो,
जीत हो जहान की,
क्यों, किसी की हार हो !
न्याय का विधान हो,
सबका हक समान हो,
सबकी अपनी ही जमीन,
सबका आसमान हो !
रंग भेद छोड़ दो,
जाति-पाति तोड़ दो,
यूँ मानवों में आपसी,
अखंड प्रीत जोड़ दो !
शांति की हवा चले,
जग कहे वले-वले
दिन उगे स्नेह का,
रात रंज की ढ़ले!
जय जगत, जय जगत,
जय जगत पुकारे जा !

संकलन, ज्योत्स्ना सक्सेना, उदयपुर

बापू -विनोबा की छवि बच्चों के मानस पटल में अंकित करने में 'जय -जगत ' गीत बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है। आज के संदर्भ में भी इस प्रेरक गीत विराट संदेश छिपा है।

शास्त्रीः सादगी और सच्चाई व स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति

शरीर से सींक सलाई परंतु मानसिक रूप में तीक्ष्ण तीर से भी पैने लाल बहादुर शास्त्री जी ने बचपन में ही अपने पिता को खो दिया था। कद में छोटे होने के कारण सभी इन्हे 'नन्हा' कहते थे।

लगभग 6-7 वर्ष की उम्र में एक बार जब ये 'नन्हा' बाल सुलभ क्रीड़ा में बगीचे में फूल तोड़ रहा था कि अचानक माली आ गया। सारे मित्र भाग गए 'नन्हा' पकड़ में आ गया। माली नन्हे शास्त्री की पिटाई करने लगा। रोते-रोते शास्त्री जी बोले 'मुझे मत मारो। मेरे पिता नहीं हैं, मुझे छोड़ दो'।

तब गंभीर होकर माली ने कहा 'बेटा! पिता के ना होने पर तुम्हारा नैतिक दायित्व और भी बढ़ जाता है, तुम्हें तो और भी कोई गलत काम नहीं करना चाहिए।'

माली की बात का नन्हे मन पर गहरा असर हुआ । उसी क्षण उन्होंने कभी भी गलत काम ना करने का संकल्प किया। सादगी सच्चाई की इस महान मूर्ति ने हमारे कर्मठ प्रधानमंत्री के रूप में ख्याति अर्जित की।

इसी तरह शास्त्री की जी एक बड़ी पहचान थी उनका स्वाभिमानी होना।

शास्त्री जी की खुद्दारी की अनेक कहानियों में गंगा की बाढ़ में नदी पार करने वाला किस्सा बड़ा ही रोचक

है जो स्वाभिमानी नन्हे लालबहादुर के हौसले को दर्शाता है। बचपन में मित्रों के साथ मेला देखने गंगा पार गए थे वापसी में नाव के पास पहुंच कर उन्हें एहसास हुआ कि उनकी जेब में नाव के किराए के लिए एक भी पैसा नहीं था। उन्होंने अपने मित्रों को जाने के लिए कहा और ऐसा दर्शाया जैसे वे अभी और मेला देखना चाहते हैं क्योंकि ना तो वे मित्रों से उधार लेना चाहते थे और ना ही नाविक के समक्ष याचक बनना चाहते थे। मित्रों के जाने के पश्चात थोड़ी देर बाद कपड़े उतार कर गंगा की उफनती नदी में लहरों में कूद पड़े। नाविकों ने उन्हें नाव का सहारा लेने का बहुत अनुरोध किया किंतु भारत का साहसी 'लाल' धारा की चुनौतियों से लड़कर थोड़ी देर में उस पार पहुंच गया।

देश को नई दिशा और दशा देने वाले शास्त्री हमेशा भारत का गौरव रहेंगे।

ज्योत्स्ना सक्सेना, प्रिंसिपल
रा.उ.मा.विद्यालय भिंडर, उदयपुर

सत्यमेव जयते

नहीं, ये आवश्यक नहीं है,
कि जब तुम बनोगे संत या पीर या कि प्रणेता,
तब ही बन पाओगे सत्य के अनुगामी,
सत्य तो निर्विकार है, निश्छल है
सत्य तो अविचलित है, अटल है,
सर्वव्यापी और सर्वग्राही है सत्य,
तुम बस इंसान बनो,
स्वीकार करो सत्य को,
हाँ कठिन है,मार्ग सत्य का,
किन्तु,असंभव भी नही,
तुम बस इंसान बनो
और राह चुनो सत्य की,
निर्बल नहीं है सत्य,
पराक्रमी है,
हाँ.....माना कि ,
समय लगता है
सत्य को प्रकट होने में,
किन्तु,जब भी प्रकट होता है,
निखर कर आता है,
ठीक वैसे ही जैसे,
खिल उठता है इंद्रधनुष,
वर्षा के बाद
और छा जाता है गगन में,
छंट जाते हैं काले बादल,
हाँ,अकेला ही होता है सत्य,
कितुं , उस कंकर की भांति होता है,
जो,उत्पन्न कर देता है तरंगे,
शांत नदी में,और ये तरंगे
तब तक तरंगित रहती हैं,
जब तक कि पा ना लें स्पर्श, किनारों का,
देखो...अखंड रखना,
सत्य की मशाल को,
ये करेगी पथ-प्रदर्शन तुम्हारा,
अमावस्या की काली रात को,
रखना विश्वास अंतर्मन में,
अपराजित है सत्य,
उस योद्धा की भांति है सत्य
जो नहीं उठाता शस्त्र
किन्तु करता है वार,
धैर्य रूपी सतगुण से,
बटोर के साहस
बढ़ता है पथ पर
और सिद्ध करता है,
सत्यमेव जयते...
सत्यमेव जयते...
सत्यमेव जयते...

मीनाक्षी माथुर, जयपुर

कौन सा गाँव क्या जात है?

ये हमारी-तुम्हारी नहीं तमाम नस्ल की बात है
जिसे तुम दिन कह रहे हो,अँधेरी स्याह रात है

सब कुछ पढ़ लिया,पर उसका हासिल क्या है
ये समाज मुर्दा सोच और समझ की जमात है

काम करने की तिशनगी क्यों कर होने लगेगी
हर कोई पूछता है , कौन सा गाँव क्या जात है

तन्त्र सुबह बदलकर शाम में वही हो जाता है
यह सिर्फ जिस्म से शहरी ; आत्मा से देहात है

हम इस्तेमाल होते रहते हैं सामानों की तरह
ग़ैर के शतरंज पर किसी और की बिसात हैं

हम कोई साज नहीं , हम कोई आवाज़ नहीं
हम गरीब इस मुल्क के चेहरे पर सवालात हैं

सलिल सरोज
नई दिल्ली

मेरा मुल्क

खामोशी से बेहतर है यारों हुँकार लगाइये
लोग जाग तक दे देंगे आवाज़ तो उठाइये
जब मुल्क मुर्दा हो तो क्या तो जश्न मनाइये
क्या तो दीये जलाइये क्या तो गले लगाइये
नया इंकलाब लाइये नयी आजादी दिलाइये
पुराने किले ढाइये नयी तामीर को बनाइये
ना हुजूम बनिये ना औरों को हुजूम बनाइये
आगे आइये, परचम उठाइये, कदम बढ़ाइये
जम्हूरियत है तो जम्हूरियत का तमाशा ना बनाइये
जो आजादी है उसे बीच चौराहे नँगा ना नचाइये
इंसान बनिये कुछ तो तहजीब सीखिये, सिखाइये
यह मुल्क हमारा है यह समझिये, समझाइये
लाइये हाथ में हाथ,कंधे से कंधा मिलाइये
दुनिया जिसकी मिसाल दे वो मुल्क बनाइये
रुसवाई को छोड़िये तारीख़ में मुकाम बनाइये
खुशहाल हो मुल्क,पचास साल इमरजेंसी लगाइये।

दिलीप तम्बोली,
अजमेर

'एक थी महुआ' का लोकार्पण समारोह सम्पन्न

मुज़फ्फरनगर। रविवार 3 अक्टूबर को एस डी कालेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलोजी के ऑडिटोरियम में मुजफ्फरनगर की लाड़ली रचनाकार सविता वर्मा 'गज़ल' के प्रथम कहानी संग्रह 'एक थी महुआ' का लोकार्पण जनपद के तथा जनपद के बाहर से पधारे मूर्धन्य साहित्यकारों की महती उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. कीर्तिवर्धन ने तथा संचालन मधुर नागवान ने किया। साहित्यिक संस्था 'शब्द संसार' द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का आरम्भ रूपा चौधरी की सरस्वती वंदना से हुआ। इस अवसर पर नेपाल की कवयित्री पूजा 'बहार' और लखनऊ की रचनाकार रश्मि श्रीवास्तव 'लहर' को आरती स्मृति सम्मान से भी पुरस्कृत किया गया।

सविता वर्मा 'गज़ल' की पुस्तक

'एक थी महुआ' के लोकार्पण के अवसर पर बोलते हुए नई दिल्ली से पधारे चर्चित कथाकार संदीप तोमर ने कहा कि सविता वर्मा गज़ल की यह विशेषता है कि उनकी कहानी लिखने की रवानगी से पाठक कहानी के अन्त तक बंधा रहता है। लेखिका हर कहानी का अन्त एक सकारात्मक समाधान के साथ करना चाहती है। इस बात की परवाह किए बिना कि ऊँट किस करवट बैठेगा,उन्होंने अपने वक्तव्य में साहित्य की विभिन्न विधाओं की विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहानी पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि इसमें संक्षिप्तता होती है, एकपन होता है - एक घटना, जीवन का एक पक्ष, संवेदना का एक बिन्दु, एक भाव, एक उद्देश्य होता है लेकिन मेरी समझ से समाधान का कहानी में विशेष महत्व नहीं होना चाहिए। हाँ इतना अवश्य है कि कहानी अपने अभीष्ट तक पहुंचे। कहानी के मुखतः 6 तत्व बताए जाते हैं- विषयवस्तु अथवा कथानक, चरित्र, संवाद, भाषा शैली, वातावरण और उद्देश्य। संक्षिप्तता' कहानी के कथानक का अनिवार्य गुण है। कहानी को उसकी स्वाभाविकता के साथ आगे बढ़ने देना चाहिए।

लालकुआँ से पधारी प्रकाशक और वरिष्ठ साहित्यकार आशा शैली ने अपने उद्बोधन में कहा कि मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ भी ग्रामीण परिवेश की सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं के इर्द-गिर्द घूमते हुए उनका समाधान तलाश करती हैं और सविता वर्मा गज़ल की कहानियाँ भी छोटे कस्बों के निम्न मध्यम वर्ग के परिवारों की कहानियाँ हैं। ऐसे में कहा जा सकता है कि सविता वर्मा गज़ल की कहानियाँ मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ की परम्परा को ही आगे बढ़ाने का कार्य कर रही हैं। कार्यक्रम के संरक्षक डॉ. एस.एन.चौहान ने कहानियों के उद्देश्यों पर बात करते हुए कहानी की दिशा और दशा में राष्ट्र निर्माण और समाज के उत्थान के सन्देश के महत्व पर चर्चा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉक्टर अ. कीर्तिवर्धन ने कहा कि जीवन में घटने वाले प्रत्येक कार्य कलाप में एक कहानी की सम्भावना होती है। एक कुशल और पारखी रचनाकार उसकी पहचान करके अपने शब्दों में ढालकर उसे एक सुन्दर कहानी का रूप दे देता है। सविता वर्मा गज़ल इस कार्य में सिद्धहस्त हैं। नगर की प्रसिद्ध सामाजिक संस्था प्रयत्न के चेयरमैन और विशिष्ट अतिथि समर्थ प्रकाश व मुकेश अरोरा ने समाज के निर्माण में कवियों, कथाकारों, रचनाकारों और साहित्यकारों के योगदान को स्वीकार करते हुए समाज की ओर से भी बदले में उन्हें आर्थिक और सामाजिक सहयोग करने पर बल दिया। प्रयत्न के ही अध्यक्ष मुकेश ने कहा- सविता वर्मा गज़ल की नाटकीयता से भरपूर कहानियाँ में अपने आस-पास के पात्र एकदम सजीव हो उठते हैं इसलिए इन कहानियों से समाज के पुनर्जागरण और पुनर्निर्माण का उज्जवल भविष्य भी दिखाई देता है।

मधुर नागवान ने अपने संचालन के साथ ही टिप्पणी दी कि कहानी आज प्रयोगों के दौर से गुज़र रही है। लिखने और पढ़ने वाले दोनों के ही पास समयाभाव होने के कारण उपन्यास बहुत कम लिखे जा रहे हैं और कहानियाँ सिकुड़ कर लघुकथा हो गई हैं। लघुकथाओं में कविताओं का फ्यूजन हो रहा है और पौराणिक कथाओं में से चमत्कारिक तत्वों को हटाकर प्रागैतिहास की कहानियाँ के पुनर्लेखन का प्रयास हो रहा है।

हापुड़ से पधारे महेश वर्मा ने कहा कि वर्तमान समय में प्रयोग के नाम फर कहानियाँ में न केवल फूहडता और अति कल्पना हावी हो रही है बल्कि शीघ्र लोकप्रिय होने की जल्दबाजी में लेखक धैर्य भी खोते जा रहे हैं। सविता वर्मा गज़ल की कहानियों से यह आशा बलवती होती है कि परम्परागत कहानी लेखन कभी भी मर नहीं सकता है।

इस अवसर पर शब्द संसार की सचिव मनु श्वेता, सुमन युगल ने सविता वर्मा गज़ल की कहानी का वाचन किया और रश्मि श्रीवास्तव 'लहर' ने 'एक थी महुआ' संग्रह की कहानियों में से चयन की गई विभिन्न विषयों पर सूक्तियाँ भी प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त कवयित्री सुमन लता, वरिष्ठ साहित्यकार गोपाल नारसन जी , खुशबू वर्मा आदि ने भी कहानी संग्रह 'एक थी महुआ' पर समीक्षा प्रस्तुत की।

इस अवसर पर सुमन प्रभा, सुमन युगल, अखिलेश साहिल, मनु स्वामी, चिराग सिंघल, अनिल ऋतुराज, योगेन्द्र सोम, जे पी सविता , डा. प्रदीप जैन, नेमपाल प्रजापति, रामकुमार रागी, पुष्पा रानी, पंकज शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

माइंस विभाग ने छह माह में की रेकार्ड 2410 करोड़ की राजस्व वसूली

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राज्य के माइंस विभाग ने सितंबर माह तक रेकार्ड दो हजार चार सौ दस करोड़ रुपए का राजस्व संग्रहित किया है। माइंस पेट्रोलियम एवं उर्जा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुबोध अग्रवाल ने बताया कि कोरोना जैसी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद राजस्व संकलन का यह नया रेकार्ड है। उन्होंने बताया कि पिछले छह माह में अवैध खनन परिवहन और भण्डारण पर सख्त कार्यवाही करते हुए 4818 वाहन मशीनरी आदि जब्त करते हुए करीब 36 करोड़ रुपए की राशि वसूली गई है। इसमें करीब 21 करोड़ रु. की राशि की वसूली अवैध बजरी खनन परिवहन और भण्डारण पर कार्यवाही करते हुए वसली गई है। अधिकारियों को रात्रिकालीन गश?त जारी रखने के निर्देश दिए गए हैं। एसीएस माइंस डॉ. अग्रवाल ने बताया कि लीज प्लॉट्स की नीलामी बजरी प्लॉट्स का आवंटन अवैध खनन परिवहन और भण्डारण पर सख्ती से राजस्व में रेकार्ड बढ़ोतरी संभव हो पाई है। उन्होंने बताया कि उच्च स्तर पर नियमित मोनेटरिंग के सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने लगे हैं। एसीएस माइंस डॉ. अग्रवाल ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जून में विभाग की समीक्षा बैठक के दौरान राजस्व बढ़ाने और अवैध गतिविधियों पर प्रभावी कार्यवाही के निर्देश दिए थे। विभाग द्वारा खनिज खनन क्षेत्र को सरकार का प्रमुख राजस्व अर्जन विभाग बनाने के समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं।उन्होंने बताया कि खान व गोपालन मंत्री श्री प्रमोद जैन भाया ने संभाग स्तर पर बैठकें आयोजित कर विभाग को नई गति देने के प्रयास शुरु किए हैं। उन्होंने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष में ई रवनना में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी होते हुए ओसतन प्रतिमाह आठ लाख से अधिक रवन्ना जारी होने लगे हैं। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि सामान्य वर्ष 2019-20 के दौरान आलोच्य अवधि में 1935 करोड़ 46 लाख रु. का राजस्व संग्रहित हुआ था वहीं गत वर्ष 2020-21 में इसी अवधि में 1820 करोड़ 56 लाख रुपए की वसूली की गई। उन्होंने बताया कि इस साल सितंबर तक गत वर्ष से 589 करोड़ और उससे पहले के साल से 474 करोड़ रु. से अधिक का राजस्व वसूला गया है।

हम गढ़ते हैं सम्पूर्ण व्यक्तित्व...

हिलव्यू इंटरनेशनल स्कूल

शास्त्री नगर, छबड़ा, बाराँ

07452-222051, 6378213439

Where the spirit of culture and harmony is its identity. Wherever you get a chance to develop self-confidence and talent in children who are weaving dreams of the future, you would like to send your beloved children for education.

संस्कार और सौहार्द का भाव जहाँ की पहचान है। भविष्य का सपना बुनते बच्चों में आत्म विश्वास और प्रतिभा को उभारने का मौक़ा जहाँ मिलता हो वहीं तो भेजना चाहेंगे... आप शिक्षा अर्जन के लिए अपनी लाडली सन्तान को...

आइये बुनते हैं सपने अपने होनहार की आँखों में फिर से एक बार विद्यालय के द्वार

Let's weave dreams in the eyes of our promising once again at the door of the school

हिलव्यू इंटरनेशनल स्कूल अब हिंदी व अंग्रेजी दोनों माध्यम में है आपके लिए...

देर न करें बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा अब हमारी ज़िम्मेदारी है। सभी शिक्षक व प्रबंधन के साथियों को वैक्सीन लग चुकी है और सेनेटाइजर व 2 ग़ज़ की दूरी के साथ ही शिक्षण व्यवस्था संचालित की जाएगी। अतः ऑनलाइन कक्षा के अलावा अब ऑफलाइन में भी बिना भय के भेज सकते हैं आप अपने बच्चों को। विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की सुरक्षा ही प्राथमिकता है।

Hillview International School is now in both Hindi and English medium for you Do not delay the health safety of children is now our responsibility. All the teachers and management colleagues have been vaccinated and the education system will be operated with sanitizer and a distance of w yards. Therefore, apart from the online class, now you can send your children without fear in offline also. The safety of the health of the students is the priority.

Every child has a hesitation to speak, write or present himself. Hillview International School eliminates that hesitation. Be it poetry writing or dancing, singing or speech e&pression, the school is determined for the all-round development of the children with all the genres. . No admission fee will be charged on new admission till 31 October 2021. Only monthly fee has to be paid.

हर बच्चे में एक झिझक होती है बोलने की, लिखने की या अपने आपको प्रस्तुत करने की। हिलव्यू इंटरनेशनल स्कूल वही झिझक मिटाता है। कविता लेखन हो या नृत्य,गायन हो या भाषण अभिव्यक्ति सभी विधाओं के साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय दृढ़ संकल्प है। । 31 अक्टूबर 2021 तक नये एडमिशन पर प्रवेश शुल्क नहीं लिया जायेगा। केवल मासिक फीस ही देनी होगी।

No admission fee will be charged on new admission till 31 October 2021. Only monthly fee has to be paid.

31 अक्टूबर 2021 तक नये एडमिशन पर प्रवेश शुल्क नहीं लिया जायेगा। केवल मासिक फीस ही देनी होगी।

Indoor Games, Outdoor Games, Computer Education and Huge Library, Music, Literature, Health, Yoga Sanskars with only one school determined to nurture every talent Hillview International School

इनडोर गेम्स, आउटडोर गेम्स, कम्प्यूटर शिक्षा व विशाल लाइब्रेरी, संगीत, साहित्य, स्वास्थ्य, योगाव संस्कारों के साथ हर प्रतिभा को उभारने के लिए दृढ़ मात्र एक विद्यालय हिलव्यू इंटरनेशनल स्कूल

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

08

जयपुर, गुरुवार, 07 अक्टूबर, 2021

महात्मा गांधी का जीवन दर्शन भारतीय समाज का दर्शनः डॉ. बीडी कल्ला

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। कला, साहित्य एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी.डी कल्ला ने कहा कि महात्मा गांधी का जीवन दर्शन भारतीय समाज का दर्शन है। बापू ने देश को सत्य, अहिंसा, सर्वोदय और सर्वधर्म समभाव के पथ पर चलना सिखाया। उन्होंने प्रांतीयता, भाषावाद एवं जातिवाद से परे आजादी की लड़ाई में पूरे देश को एक सूत्र में बांधा। हम उनकी शिक्षा और आदर्शों को अपने जीवन में उतारकर राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव रखते हुए अपने आपको समाज सेवा में समर्पित करने का संकल्प लें।

डॉ. कल्ला जयपुर में रवीन्द्र मंच पर कला, साहित्य एवं संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर गांधी सप्ताह के आयोजनों की कड़ी में रवीन्द्र मंच सोसाईटी एवं जयपुर कथक केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कार्यक्रम में कत्थक के माध्यम से बापू के प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिए...' की प्रस्तुति को अलौकिक बताते हुए पूरी टीम को बधाई दी। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि विख्यात कथक नृत्यांगना प्रेरणा श्रीमाली ने कहा कि कलाएं महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा और श्रम के संदेशों पर खरी उतरती है। अहिंसा को कलाओं के माध्यम से सबसे बेहतर तरीके से समझा जा सकता है।

रवीन्द्र मंच प्रबंधक, शिप्रा शर्मा ने कार्यक्रम में सभी अतिथियों और कलाकारों को स्वागत करते हुए मंच की गतिविधियों और यहां कराए जा रहे विकास कार्यों की जानकारी दीं। मुख्य अतिथि, कला एवं संस्कृति मंत्री, डा.बी.डी.कल्ला एवं विशिष्ट अतिथि विख्यात कथक नृत्यांगना प्रेरणा श्रीमाली ने दीप प्रज्ज्वलन एवं महात्मा गांधी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

आचार्य डा. रेखा ठाकर के निर्देशन में गांधीजी के प्रिय भजनों, 'रघुपति राघव' तथा 'वैष्णवजन तो तेने कहिये' को कत्थक शैली में संयोजित करते हुए आकर्षक प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया। इसमें कनिका, शगुन, प्रेरणा, अनन्या, रिया, शालिनी, लाछी, अर्थवा एवं याशिका ने भाग लिया एवं पखावज पर डा. प्रवीण आर्य, गायन पर मुन्ना लाल भाट, तबले पर महेन्द्र शंकर डांगी, सितार पर हरिहरशरण भट्ट, सारंगी पर उ.माईनुद्दीन खान ने संगत की।

कार्यक्रम की दूसरी प्रस्तुति में ललित सहगल द्वारा लिखित एवं एपिलोग थियेटर सोसायटी की सुनिता तिवारी नागपाल द्वारा निर्देशित नाटक 'हत्या एक आकार की' का मचंन किया गया । नाटक के अन्तर्गत चार लोग जो 'उनकी' हत्या करना चाहते हैं जिनके सत्य, अहिंसा और साम्प्रदायिक सद्भाव के जीवन मूल्य इन लोगों की संकुचित समझ में कमज़ोरी की निशानी है। चारों लोग अपने मिशन पर निकलने वाले ही थे कि उनको संदेह होने लगा कि किसी को प्राणदंड देने से पहले अपराध एवं दंड पर गंभीर विचार हो। आखिर तय किया गया कि एक मुकदमे का अभिनय किया जाये। और इस मुकदमे के माध्यम से सत्य, अहिंसा और साम्प्रदायिक मूल्यों की सार्थकता सब के सामने स्पष्ट हो जाती है। नाटक की प्रस्तुति में सउद नियाजी, पुलकित हेमन्त एवं सूर्यांश ने भाग लिया।

कंचन आनंद जेसीएस की अध्यक्ष चुनी गईं

जयपुर। जयपुर कल्चरल सोसायटी की बैठक शनिवार 2 अक्टूबर को सी स्कीम स्थित डी श्री रेस्टोरेंट में आयोजित की गई। जिसके अध्यक्ष आनंद गंगवार के देहवसान के पश्चात अध्यक्ष पद रिक्त चल रहा था अतः सर्वसम्मति से कंचन आनंद को अध्यक्ष पद भार सौंपा गया एवम कोषाध्यक्ष स्तुति गंगवार को बनाया गया। जेसीएस के उपाध्यक्ष संजय सोनी हैं।

जेसीएस की आगामी कार्ययोजना व कार्यक्रम पर चर्चा की गई एवम अक्टूबर के अंत में श्रद्धांजलि संगीत सन्ध्या आयोजित करने का प्रस्ताव लिया गया। इस बैठक में विजय अग्रवाल, सुधीर शर्मा, शैलेंद्र माथुर, अतुल माथुर, शालिनी श्रीवास्तव, दुर्गाप्रसाद माथुर, अतुल श्रीवास्तव, मुकेश पारीक, कैलाश सोगानिया, कुलदीप गुप्ता, एन.एस.मेहता, शेखर श्रीवास्तव, भरत आगा, ऋतिका श्रीवास्तव, स्वाति सिन्हा, अंजलि वर्मा, रेखा रावत व मौजूद रहे। कंचन आनंद ने विश्वास दिलाया कि जेसीएस आनंद गंगवार के सिद्धान्तों को हमेशा बरक़रार रखेगी और आगामी कार्यक्रम जल्द घोषित किये जायेंगे।

ग्राम सेवा सहकारी संस्थाओं को मजबूत बनाने में नाबार्ड करे सहयोगः मुख्यमंत्री गहलोत

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश में सहकारिता आंदोलन को गति देने तथा सहकारी संस्थाओं को मजबूत बनाने में नाबार्ड से और अधिक सहयोग का आह्वान किया है। उन्होंने कहा है कि सहकारिता के माध्यम से प्रदेश के विकास से जुड़ी परियोजनाओं में नाबार्ड और अधिक सशक्त एवं सक्रिय भागीदारी निभा सकता है। गहलोत से सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर नाबार्ड के चेयरमैन डॉ. जीआर चिंतला ने मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में सहकारी संस्थाओं को बढ़ावा देने तथा उनके वित्तीय सशक्तीकरण के लिए लगातार प्रयास कर रही है। उन्होंने नाबार्ड चेयरमैन से प्रदेश में ग्राम सेवा सहकारी संस्थाओं के विस्तार तथा उनके कम्प्यूटरीकरण में सहयोग के लिए कहा। साथ ही, ग्राम सेवा सहकारी समितियों के कार्य विविधिकरण पर जोर देते हुए इन्हें अन्य नवीन गतिविधियों जैसे कृषि प्रसंस्करण एवं मार्केटिंग आदि से जोड़ने के लिए नाबार्ड की योजनाओं के तहत लाभान्वित करने की बात कही। मुख्यमंत्री ने नाबार्ड का आह्वान किया कि हैण्डीक्राफ्ट्स से जुड़े लोगों एवं मसाला उत्पादकों को अपने उत्पादों का उपयुक्त दाम दिलाने के लिए राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मार्केट लिंकेज उपलब्ध कराने में नाबार्ड सहयोग करे। गहलोत ने इस दौरान नाबार्ड से प्रदेश के लिए आधारभूत संरचनाओं के विकास हेतु प्रदत्त ऋण लक्ष्यों को 1800 करोड़ रूपए वार्षिक से बढ़ाकर 10 हजार करोड़ रूपए वार्षिक तक करने का भी आग्रह किया। इससे राज्य सरकार को सड़क, कृषि, पशुपालन एवं ग्रामीण विकास से जुड़ी योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन में मदद मिलेगी। साथ ही, एफपीओ, स्वयंसेवा सहायता समूहों को सशक्त बनाने तथा उद्यमिता विकास के लिए ऋण एवं अनुदान सहायता प्रदान करने पर भी चर्चा हुई।

राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम की वीडियो कान्फ्रेंस द्वारा समीक्षा

प्रदेश में होगा वर्ष 2025 तक क्षय रोग का उन्मूलनः चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने प्रदेश में वर्ष 2025 तक क्षय रोग का उन्मूलन करने के लिए समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित कर आवश्यक कार्य करने के निर्देश दिए है। उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तक बलगम जांच की सुविधा सुनिश्चित करने के साथ ही स्वास्थ्य उपकेन्द्रों में सैम्पल कलेक्शन की सुविधा उपलब्ध करवाने के भी निर्देश दिए है।

डॉ. शर्मा सोमवार को राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम की वीडियो कान्फ्रेंस द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने क्षय रोग उन्मूलन के संबंध में राज्य एवं जिला स्तर पर किए जा रहे कार्यों की विस्तार से समीक्षा की एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। चिकित्सा मंत्री ने बताया कि विश्व के लगभग 26 प्रतिशत क्षय रोगी हमारे देश है और हमारे देश के लगभग 6 प्रतिशत क्षय रोगी राजस्थान में है। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 2030 तक विश्व को क्षय रोग से मुक्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसी क्रम में हमारे देश में वर्ष 2025 तक क्षय रोग उन्मूलन का लक्ष्य है। प्रदेश का चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग राजस्थान को इस निर्धारित अवधि में क्षय रोग से पूर्णतः मुक्त करने के लक्ष्य को लेकर कार्य कर रहा है।

डॉ. शर्मा ने बताया कि प्रदेश में प्रति माह लगभग 12 से 17 हजार बलगम के नमूने लेकर जांच की जा रही है। गत कुछ समय से कोरोना के कारण यह कार्य प्रभावित हुआ लेकिन अब पूरी क्षमता के साथ जांच व उपचार करने के निर्देश दिए गए है। उन्होंने बताया कि क्षय रोग उन्मूलन के लिए नए मरीजों को डिटेक्ट कर उन्हें समय पर गुणवता युक्त उपचार उपलब्ध करवाने पर विशेष बल दिया जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार 85 प्रतिशत रोगी लगभग 6 माह के उपचार में क्षय रोग से मुक्त हो सकते है।

चिकित्सा मंत्री ने क्षय रोग के मरीजों को ''निक्षय पोषण योजना'' के तहत उपलब्ध करवाई जा रही सहायता के बारे में विस्तार से समीक्षा की एवं सभी मरीजों के बैंक खातों में समय पर निर्धारित राशि जमा करवाना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस योजना के तहत क्षय रोग के मरीजों को 500 रूपये एवं ट्राइबल एरिया के मरीजों को 750 रूपये प्रतिमाह की सहायता राशि उपलब्ध करवाई जा रही है।

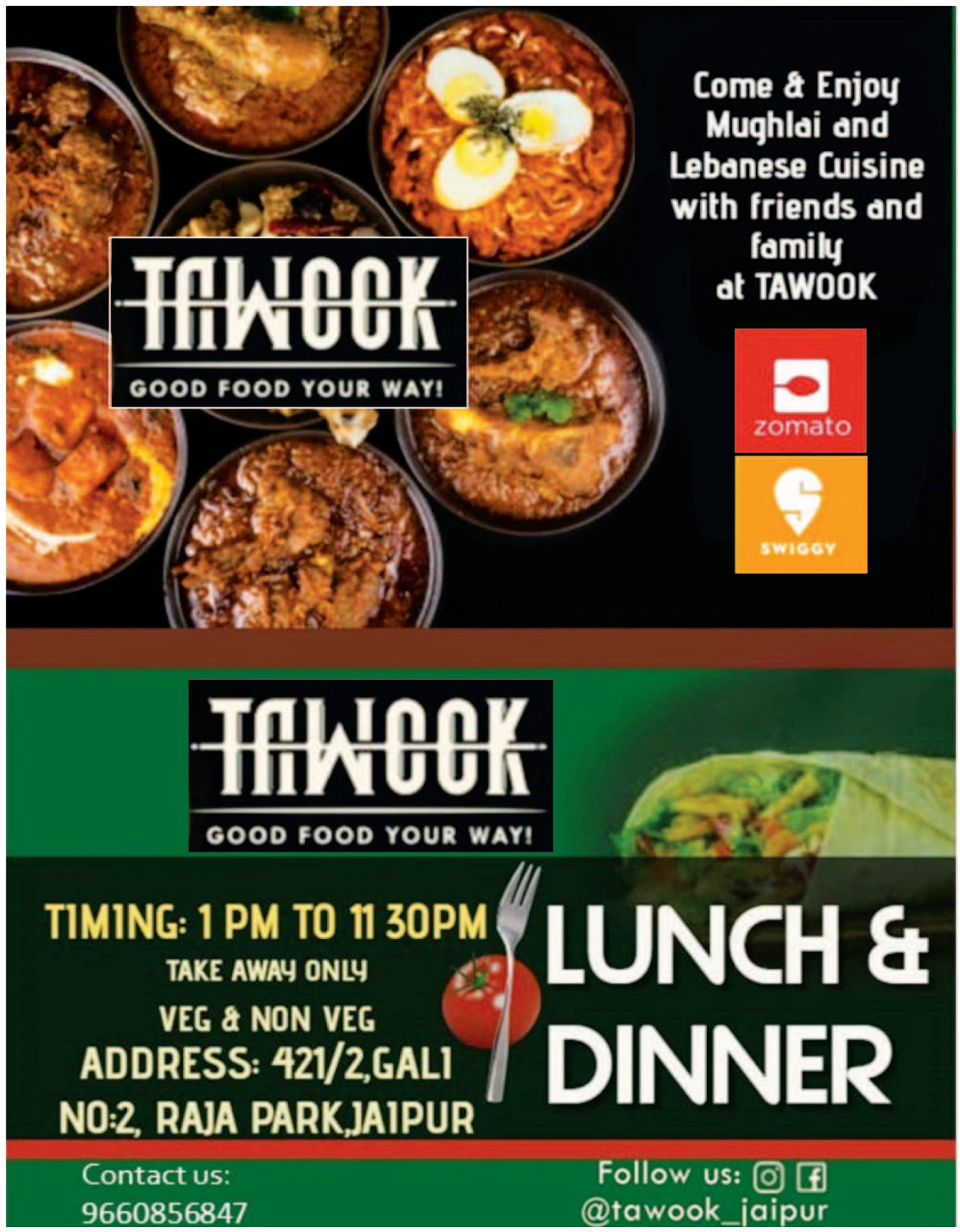

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**